चन्दामामा
जनवरी १९९८

PARLE

कभी न हम भूलें जी... जीते जी

जीने की राह यही है सही

जीवन की इन राहों में हर कदम है इम्तिहान. किन राहों को अपनाएंगे, किन से मुंह मोड़ेंगे, यही हमारी पहचान. बिना चाह के, बिना आस के, किसी का हाथ बंटाना, यूं ही राह चलते, किसी के काम आना. इसी को कहते सच्चाई से जीना. कभी न हम भूलें जी . . . जीते-जी, जीने की राह यही है सही.

बरसों से भारत के सबसे ज्यादा चाहे जानेवाले बिस्किट

• स्वाद भरे, सच्ची शक्ति भरे •

everest/95/PPL/108 R hn

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कामिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण रमन की ससुराल
अग्निपुत्र अभय और त्रिकाल
बेताल पच्चीसी-3
जेम्स बाण्ड-64
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट फैन्टम-74
मैन्ड्रेक-61
महाबली शाका और अमन के दुश्मन
प्राण बिल्लू का समोसा
प्राण चाचा चौधरी और हिम मानव
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें
और बचायें रु. 200/- वार्षिक
अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे डायमण्ड कामिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ डायमण्ड कामिक्स नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जायें साथ ही ढेरों इनाम पायें।
हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।
1 वर्ष में महीने — बचत (रु.) — कुल बचत (रु.)
12 — 4/- (छूट) — 48.00
12 — 7/- (डाक व्यय) — 84.00
1 — 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) — 48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री — 20.00
200.00
सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।
हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक
जिला
पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म दिन
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
नई अमर चित्रकथायें
• महाभारत • ध्रुव • मंगल पांडे • आदिशंकराचार्य • सतवंत कौर • गुरु नानक • शंकर देव
• बलराम की कथायें • कृष्ण और जरासंध • जातक कथाएं (वानर की कथाएं)
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020
महिलाओं की अपनी पत्रिका गृहलक्ष्मी

रसना ने सजाया है नया अनोखा प्यारभरा ससांर। जहां आप को मिलेंगे झूमता-कूदता ऑरेन्जउटान, प्यारी प्यारी मैन्गोस व गुदगुदाता स्ट्रॉबियर। हाँ, ये ही तो है रसना कैन्डीज। इन प्यारे प्राणीयों के आकारो में। जानते हैं, मूहसें पानी लाने वाली रसना कैन्डीज की कीमत है केवल ५० पैसे में एक। रसना कैन्डीज की एक और किफायती श्रंखला भी है, जिस में आप को मिलेंगे संतरा, आम व पाइनेपल के चटखारेदार स्वादों वाली

खुशियाँ मनाएं,
के साथ धूम मचाएं।

Rasna
Mangose

Rasna
Orangutan

Rasna
pinopiranha

Rasna
strawbear

कैन्डीज। वो भी केवल २५ पैसे में एक।

अरे हमारी क्रिम भरी टॉफियों की तो बात ही निराली है. इन्हें देखते ही मुंह में पानी और चेहरे पे मुस्कान आ जाएं। तो चलो चलें बचपन का भरपूर मौज लूटने रसना कैन्डीज और टॉफियों के संग।

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी' संचालक : बी. नागिरेड्डी

तपस्वियों का विद्रोह

अठारहवीं शताब्दी में भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध जो विद्रोह हुआ, वह शायद इतिहास में ही अतिविचित्र विद्रोह समझा जायेगा।

तपस्वी साधारण जनता से दूर गुफाओं और अरण्यों में रहा करते थे। सामाजिक समस्याओं से दूर रहने की उनकी प्रवृत्ति थी और उनका यह सिद्धांत भी था। इस स्थिति में वे किसके विरुद्ध विद्रोह करें और क्यों करें?

उन्होंने अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध विद्रोह किया। उन्होंने उन ज़मींदारों के विरुद्ध भी विद्रोह किया, जो दरिद्र किसानों का निर्दयतापूर्वक शोषण कर रहे थे, विशेषतया पूर्वी क्षेत्र याने बिहार और बंगाल में बड़े पैमाने पर यह चल रहा था। अठारहवीं शताब्दी के सत्तरवें वर्ष में वहाँ अकाल पड़ा था। किन्तु कंपनी ने किसानों की समस्याओं को समझने और सुलझाने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी। उल्टे उन्होंने उनसे ज़्यादा से ज़्यादा कर वसूल किये और जितना हो सके, लूटते रहे। यहाँ तक कि अब प्रजा के पास देने के लिए भी कुछ न रहा।

सन्यासियों ने तीर्थस्थानों पर जनता को इन अत्याचारों के विरुद्ध जमकर लड़ने के लिए आह्वान दिया। कंपनी ने सन्यासियों को सबक सिखाने का निश्चय किया। पवित्र स्थलों में उनके प्रवेश पर पाबंदियाँ लगायी गयीं।

सन्यासी भी कंपनी के खिलाफ़ लड़ने के लिए मुस्तैद हो गये। उन्होंने कंपनी की छावनियों पर धावा बोल दिया। मुस्लिम फ़क़ीर भी इस अभियान में शामिल हुए। भवानी पाठक ने इस अभियान का नेतृत्व संभाला। देवी चौधरानी, मजनू फ़क़ीर, म्यूषा शाह, कृपानाथ और चेरग अली भी इस जत्थे में शामिल थे।

देवी चौधरानी बड़ी ही साहसी स्त्री थीं। वे एक नौका में रहती थीं, जिसके चारों ओर प्रशिक्षित धनुर्धारी पहरा देते थे।

कुछ सालों के बाद यह विद्रोह दबा दिया गया। बंकिमचंद्र चटर्जी ने दो उपन्यास लिखे, जिनके द्वारा इस विद्रोह का महत्व व महिमा और बढ़े। बंगाली में उन्होंने ये दोनों उपन्यास लिखे। जिनके नाम हैं-'आनंदमठ', 'देवी चौधरानी', हमें स्फूर्ति देनेवाला वंदेमातरम गीत 'आनंदमठ' का ही एक अंश है।

वर्ष : ४८ जनवरी १९९८ अंक : १

एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

POLIO, QUIT INDIA!.

Protect your child and the nation!
Participate in the mass
polio vaccination!

December 7, 1997
January 18, 1998

CALLING PARENTS!

Even if

- the child is indisposed or has diarrhoea
- the child had been given polio drops earlier

TO ENSURE CENT PER CENT PROTECTION

Remember to

Take your children (under 5) to the nearest immunisation booth / centre to receive

TWO ADDITIONAL DROPS OF THE ORAL POLIO VACCINE on National Immunisation Days

Be a part of the global Polio Eradication Campaign

You don't just have to protect, but help eradicate POLIO

समाचार-विशेषताएँ

प्रथम भारतीय महिला अंतरिक्षगामी

कल्पना चावला ने कर्नाल के ठागूर बालनिकेतन में शिक्षा पायी । बचपन से ही उन्हें वायुयानों के चित्र खींचने में बड़ी ही अभिरुचि थी। हाईस्कूल की पढ़ाई की समाप्ति के बाद उनके माता-पिता ने चाहा कि वे डाक्टर बनें, पर वे इंजीनियरिंग पढ़ना चाहती थीं। उन्होंने हठ किया और अंतरिक्षशास्त्र (येरोनाटिक्स) को अपना प्रधान पाठ्यांश चुना। अठारह वर्षों के निर्विराम परिश्रम तथा अकुंठित दीक्षा के फलस्वरूप वह नवंबर १५ को और छे व्योमगामियों के साथ कोलंबिया व्योमनौका में अंतरिक्ष में उतरने चल पड़ीं।

अंतरिक्ष की यात्रा करनेवाली ये प्रथम भारतीय महिला हैं। साथ ही ये एशिया देशों में से अंतरिक्ष में जानेवाली प्रथम महिला भी हैं। अपने इस साहसपूर्ण प्रयास के कारण इन्होंने सबका ध्यान आकृष्ट भी किया।

कर्नाल हरयाना राज्य का छोटा-सा शहर है। यह शहर दिल्ली की सरहदों पर स्थित है। यहाँ कल्पना चावला ने जन्म लिया। ये अंतरिक्षशास्त्र को अपना प्रधान पाठ्यांश के रूप में चुननेवाली प्रथम महिला मात्र ही नहीं बल्कि उस विभाग में वे सर्वप्रथम आयीं महिला भी हैं। अध्यापकों ने इनकी भरपूर प्रशंसा भी की। उपाधि प्राप्त करने के बाद और ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमेरिका भी गयीं। अंतरिक्षशास्त्र में इन्होंने अनुसंधान किया और डाक्टरेट भी बनीं। उनका परिचय व्यापारिक विमानचालक जीन हारिसन से हुआ। उनका विवाह बाद हुआ। अपने पति की सहायता से उन्होंने भी व्यापारिक विमानचालिका की अनुज्ञा पायीं। १९८७ में उन्होंने अकेले हवाई जहाज़ चलाया।

तदनंतर उनकी दृष्टि अंतरिक्ष संबंधी अनुसंधानों पर केंद्रित हुई। 'नेशनल येरोनाटिक्स एण्ड स्पेस अडमिनेस्ट्रशन' (नासा) में शामिल हुई। फिर एक विभाग की उपाध्यक्षा बनीं। अंतरिक्षगामियों के लिए जो इश्तहार प्रकाशित हुआ, उसे उन्होंने देखा। उन्होंने १९९२ में आवेदन-पत्र भेजा। १९९२ में वे चुनी नहीं गयी। १९९४ में उन्होंने एक और आवेदन पत्र भेजा। ३००० आवेदकों ने आवेदन-पत्र भेजे। शारीरिक, मानसिक तथा चिकित्सा संबंधी वैद्य परीक्षाएँ देने के बाद उन्नीस आवेदक चुने गये। उनमें से कल्पना चावला भी एक थीं। १९९६ में आखिर वे चुनी गयीं और वे सोलह महीनों तक प्रशिक्षण पाने के लिए हौस्टन प्रशिक्षण केंद्र भेजीं गयीं। नासा ने ८८वाँ अंतरिक्षयान भेजने की व्यवस्था की। इनमें तीन अमेरिकी अंतरिक्षगामी थे। जापान से प्रथम महिला अंतरिक्षगामी टका डोल भी एक सदस्या थीं। युक्रेनियन देश से एक अंतरिक्षगामी इसमें शामिल था। इन सबके साथ कल्पना चावला नवंबर १९ को कोलंबिया के ८८वें अंतरिक्षयान में अंतरिक्ष जाने निकल पड़ीं।

अंतरिक्ष में बिताये जानेवाले पंद्रहों दिनों में उन्हें द्रव आहार ही लेते रहना होगा। हर दिन सोलह घंटो तक उन्हें अनुसंधान संबंधी कार्यों में व्यस्त रहना होगा। शेष आठ घंटों में वे क्रमवार सो सकते हैं।

व्योमनौका में जो अनुसंधान होते हैं, वे कल्पना चावला के जिम्मे हैं। स्वतंत्र उड़ान साटिलैट भी वे ही प्रदान करती हैं, जिसके द्वारा सूर्य का अध्ययन होता है। टका डोल भी अंतरिक्ष में साथ-साथ पैदल जाएँगीं।

कल्पना चावला की इस अंतरिक्ष यात्रा को हमारे देश के लोग बड़ी ही आसक्ति के साथ देख रहे हैं। अंतरिक्ष-यात्रा करने निकलने के पहले भारतीय प्रतिनिधियों से कल्पना चावला ने कहा, ''भारत देश के लिए यह गर्व का समय है।''

वेदवती

रामदास और लक्ष्मी पुण्य दंपति थे। वे चंदनपुर में रहते थे। लंबी अवधि के बाद उनकी एक लड़की हुई। आनंदभरित उसकी मुस्कान बड़ी ही मनोहर होती थी। लगता था, वेदपठन हो रहा हो। इसलिए उन्होंने उसका नाम रखा वेदवती।

एक बार वह अपनी माँ का दूध पी रही थी। उस समय उसने अपनी मुट्ठी से साड़ी को कसकर पकड़ा। माँ ने बहुत कोशिश की, किन्तु अपनी साड़ी छुड़ा नहीं सकी। रामदास भी आया और उसने भी साड़ी छुड़ाने का सबल प्रयत्न किया। परंतु साड़ी के फटने के बाद ही नन्हीं बच्ची का हाथ बाहर आया। कीमती साड़ी के फटने की वजह से माँ को बहुत दुख हुआ। पर तीन साल की उम्र की बच्ची को कोई क्या कहे। जिन्हें यह बात मालूम हुई वे कहने लगे, इतनी छोटी उम्र के शिशु की ऐसी पकड़ विशिष्ट बात नहीं तो और क्या है।

तीन और महीनों के बाद वेदवती रेंगती हुई गयी और एक मेज़ को खींचा। उस मेज़ पर बहुत ही पुरानी कांच की सुराही थी। वह ज़मीन पर गिरी और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। वह सुराही बड़ी ही सुंदर थी। उसके ऊपर नक्काशी का काम भी किया गया था। उसके टूट जाने पर रामदास को बहुत ही दुख हुआ। वह सुराही दादा-परदादा के ज़माने से उनके यहाँ थी। लक्ष्मी को इस बात पर खुशी हुई कि बच्ची को कोई चोट नहीं पहुँची।

साल होते-होते वेदवती ने घर की बहुत-सी चीजों को तोड़ा-फोड़ा। कुछ लोगों ने कहा, बच्चे जिस घर में हैं, वहाँ यों होना स्वाभाविक है। पर कुछ और लोगों ने टिप्पणी की कि वेदवती पर कोई दुष्ट शक्ति हावी है। रामदास को भी लगा कि अवश्य ही दाल में

परमानंद

कुछ काला है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एक छोटी-सी बच्ची में इतनी शक्ति कैसे संभव है। इसलिए उनकी बातों का विश्वास करके रामदास एक हठयोगी से मिलने गया।

चंदनपुर के दो कोस दूर वह हठयोगी रहता है। कहते हैं, उसने अष्ट सिद्धियाँ साधी है। कोई ऐसी माया, मंत्र नहीं, जिन्हें वह नहीं जानता हो। रामदास ने जब अपनी समस्या बतायी तो हठयोगी के आनंद की सीमा न रही। उसे लगा कि अपनी शक्ति को साबित करने का एक और मौका उसके हाथ आया। वह रामदास के साथ चंदनपुर आया। वह अपना मंत्रदंड भी ले आया।

वेदवती लड़खड़ाकर चलती हुई उस मेज़ के पास आयी, जिसपर मंत्रदंड रखा हुआ था। जब वह मंत्रदंड अपने हाथों में लेने का प्रयत्न कर रही थी, तब मंत्रदंड नीचे गिरा और टूट गया। हठयोगी ने जब यह देखा तब वह अपनी छाती पीटते हुए कहने लगा "तुमने जब मेरे मंत्रदंड के ही टुकड़े-टुकड़े कर दिये तब स्पष्ट है कि तुम कोई साधारण बालिका नहीं हो। तुम्हें अब वेदवती के नाम से नहीं, भेदवती के नाम से पुकारना चाहिये। मैं तो एक क्षण भी यहां नहीं ठहरूँगा। मैं नहीं समझता कि तुम्हारी चिकित्सा मुझसे संभव है।" वह मंत्रदंड के टुकड़े लेकर वहां से चला गया।

तब से सब लोग वेदवती को भेदवती कहकर पुकारने लगे। अपने नाम के अनुरूप ही व्यवहार करती हुई वह यौवनावस्था में पहुँची। भेदवती के बरताव से माता-पिता बहुत ही चिंतित होने लगे। वह पेड़ से फल तोड़ती तो टहनी ही टूट जाती थी। कली तोड़ती तो मूल सहित पौधा निकल आता था। कुएँ से पानी खींचती तो बाल्टी कुएँ में

एक युवक अपने अजीबोगरीब चमत्कारों के लिए प्रख्यात हुआ। उन्हीं के बल पर वह वज्रों की चोरी करता था। उसकी चोरी का तरीक़ा यों था। वह एक प्रकार की मिट्टी से आधी हथेली के प्रमाण की मानव की तस्वीर बनाता था। वज्रों की दुकान में जाता था। बड़ी ही चालाकी से वज्र की चोरी करता था और उसे तस्वीर के रूप में बदल देता था। वज्र जब उस मुलायम तस्वीर में सिमट जाता था तब तस्वीर भी वज्र की ही तरह सख़्त हो जाती थी। फिर वह तस्वीर को तोड़ता था और वज्र निकाल लेता था। यह विद्या केवल नंदन ही जानता था। इस कारण उसपर किसी ने शंका भी नहीं की। कोई जानता भी नहीं था कि वह वज्रों का चोर है।

नंदन एक बार वज्रपुरी गया। वज्रनाथ नामक एक युवक की दुकान में गया। वह ग़ौर से वज्रों को देखने लगा, मानों उनमें से उत्तम वज्र को खरीदना चाहता हो। एक क़ीमती वज्र को बड़ी ही निपुणता के साथ तस्वीर में घुसा दिया। दुकान में काम करने वाले एक कर्मचारी ने यह देख लिया और अपने यजमान को बताया। वज्रनाथ ने आकर देखा तो सचमुच ही एख वज्र नदारद था।

नंदन की तस्वीर पर कोई ऐसा निशान नहीं था, जिससे यह जाना जा सके कि वज्र कहीं छिपा दिया गया है। फिर भी कर्मचारी बार-बार बता रहा था कि मैंने अपनी इन आँखों से इसे वज्र की चोरी करते हुए देखा।

''महाशय, यह तस्वीर अभेद्य पदार्थ से बनायी गयी है। आपका यह कहना हास्यास्पद है कि मैंने इस तस्वीर के अंदर

ही रह जाती थी। घर में झाड़ू देती तो ज़मीन में गड्ढे पड़ जाते थे। बरतन मांजती तो ऐंठ जाते थे। कपड़े धोती तो फट जाते थे। उसके हाथों में हमेशा कोई न कोई वस्तु ख़राब हो जाती थी, इसलिए उसे कोई काम सौंपने से माता-पिता बहुत डरते थे।

भेदवती कभी किसी के घर जाती तो घरवाले उसे देखकर डरते थे। इस कारण अपनी सहेलियों से खेलने के लिए वह गाँव के बाहर जाया करती थी। वेदवती से भेदवती बनी अपनी पुत्री के जीवन के भविष्य को लेकर उसके माता-पिता बहुत ही चिंतित रहते थे। उसके बारे में सोचने मात्र से उन्हें डर लगने लगा था।

ऐसे समय पर चंदनपुर से एक कोस की दूरी पर स्थित मृत्तिकापुर में नंदन नामक

वज्र घुसा दिया है।'' नंदन ने झूठी नाराज़ी ज़ाहिर करते हुए कहा।

परंतु वज्रनाथ ने उसपर शंका करते हुए कहा, ''मेरा कर्मचारी झूठ नहीं बोलता। अलावा इसके, दुकान में एक वज्र की कमी हो गयी। अगर हम इस तस्वीर को फोड़कर परीक्षा कर ले, तो क्या तुम्हें कोई एतराज है ?''

नंदन ने कहा कि उसे कोई एतराज नहीं है। उस तस्वीर को फोड़ने के बहुत से प्रयत्न हुए उस दुकान में। पहले हाथों से फोड़ने की कोशिश की गयी। फिर हथौड़े से फोड़ने के प्रयत्न किये गये। फिर वज्रों को काटनेवाले यंत्रों का उपयोग हुआ।

तस्वीर के रूप में काई तब्दीली नहीं हुई। जैसी थी, वैसी ही थी। कुछ लोगों ने कहा ''इतनी सख़्त तस्वीर में वज्रों को छिपाया ही नहीं जा सकता। यह नामुमकिन है''।

केवल वज्रनाथ कहता रहा, ''मेरे खोये वज्र की क़ीमत पाँच लाख अशर्फ़ियाँ हैं। जब तक यह तस्वीर फोड़ी नहीं जायेगी तब तक मैं यह विश्वास ही नहीं करूँगा कि इस तस्वीर में मेरा वज्र नहीं है। क्या इस तस्वीर को तोड़ने या फोड़ने का कोई उपाय ही नहीं।'' वह बहुत ही चिंता-ग्रस्त था।

उस दुकान में तभी चंदनपुर के एक नागरिक ने क़दम रखा और विषय की जानकारी पाकर उसने कहा ''यह काम हमारी भेदवती से अवश्य ही संभव होगा।'' उसने वहाँ उपस्थित लोगों को भेदवती की कहानी सुनायी।

दुकानवालों ने सब कुछ सुनने के बाद कहा, ''यह तो मनगढंत कहानी लगती है। सुनने में अच्छा तो लगता है, पर वास्तविकता से दूर है, यह असाध्य कार्य है।'' परंतु वज्रनाथ ने कहा, ''इन बातों को हवा में मत
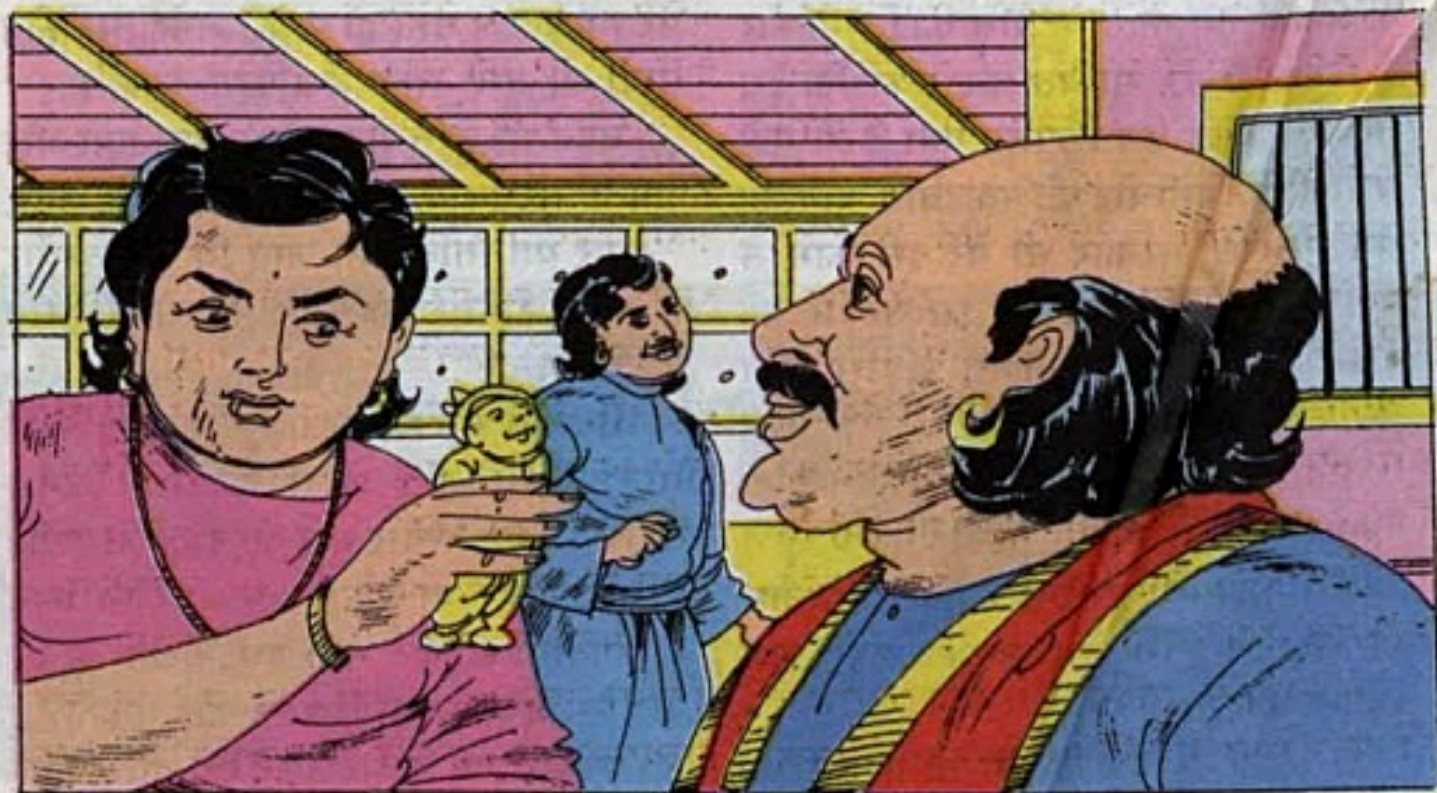
उ[illegible]दीजिये। किसी को क्या मालूम, किस बि[illegible] कौन-सा साँप छिपा है। मेरे विचार के [illegible]र इस नंदन के पास कोई चमत्कार [illegible] मैं यह साबित कर सका कि इस तस्[illegible] अंदर वज्र छिपाया गया है तो मुझे बज्रों [illegible] महाचोर को पकड़वाये जाने का श्रेय मि[illegible] सरकार भी मेरे इस काम से खुश होगी[illegible]गर भेदवती इस तस्वीर को तोड़ने में [illegible]ब होगी तो मैं उसे लाख असर्फियाँ भें[illegible] दूँगा।''

नंदन ने तै[illegible] आकर ललकारा। कहा ''अगर भेदवती इस तस्वीर को फोड़ न सकी तो मुझे मेरे [illegible]ों से प्राप्त वज्र वज्रनाथ को खरीदने होंगे [illegible]र उनका सही दाम चुकाना होगा।''

''तस्वीर से वज्र [illegible]ला तो तुम्हारे घर में जितने भी वज्र हैं, वे सबके सब मेरे ही होंगे। मैं उन वज्रों को सरकार के सुपुर्द करूँगा। शर्त मंजूर है ?'' वज्रनाथ ने पूछा।

इस प्रकार वे एक निर्णय पर पहुँचे और दोनों चंदनपुर निकले। वे रामदास के घर जाकर अपनी समस्या बताने ही वाले थे कि इतने में देखा कि गाँव के बाहर कुछ बालक-बालिकाएँ खेलों में मग्न थे। उनके बीच नक्षत्रों के बीच चन्दामामा की तरह भेदवती देदीप्यमान दिखायी पड़ी। उसकी सुंदरता पर दोनों अवाक् रह गये। फिर मालूम हुआ कि वही लड़की भेदवती है। इस बीच कुछ ग्रामीण भी वहाँ इकट्ठे हो गये।

वज्रनाथ ने तस्वीर भेदवती को दिखायी और कहा ''मेरा नाम वज्रनाथ है। मैं वज्रों का व्यापार करता हूँ। इस तस्वीर के अंदर पाँच लाख अशर्फियों के मूल्य का वज्र है। इस तस्वीर को फोड़ने की बहुत कोशिशें हुईं, पर हम सफल नहीं हो पाये। अगर तुम फोड़ पायी तो तुम्हें लाख अशर्फियाँ दूँगा''।

नंदन भी तुरंत भेदवती के पास गया और अपना परिचय दे चुकने के बाद उसने कहा, ''अगर यह साबित हो जाए कि इस तस्वीर में कोई कीमती वज्र नहीं है, तो मैं तुमसे शादी करूँगा''।

भेदवती नाराज़ होती हुई बोली, ''मेरे माता-पिता हैं। शादी की बात उनसे कीजिये। वह तस्वीर मुझे दीजिये। जो हथौड़े से फोड़ा नहीं जा सका, यंत्र भी जिस काम में उपयोगी साबित नहीं हुए, देखती हूँ कि क्या उसे अपने खाली हाथों से फोड़ सकूँगी''?

वज्रनाथ जब तस्वीर उसे दे रहा था, तब वह

भेदवती के हाथ से फिसल गयी और एक बड़े पथ्थर पर जा गिरी। दूसरे ही क्षण तस्वीर के टुकड़े-टुकड़े हुए। उसमें से वज्र बाहर निकला।

"यह रहा मेरा वज्र" कहते हुए झपककर वज्रनाथ ने वज्र अपने हाथ में ले लिया। नंदन ने ऊंचे स्वर में चिल्लाते हुए कहा, "अवश्य ही इसमें कोई धोखा है। ऐसा धोखेबाज धन के लिए हत्याएँ करने से भी नहीं हिचकेगा" कहकर वह वहाँ से भागने लगा।

भीड़ में से चार युवकों ने उसका पीछा किया और उसे भागने नहीं दिया।

वज्रनाथ ने उनसे कहा, "इसे नगर में ले जाइये और कोतवाल को सौंपिये। इसके घर में यहाँ-वहाँ चोरी के बहुत-से वज्र हैं। यह रहस्य भी उससे बता दीजिये"।

रामदास और लक्ष्मी को जब मालूम हुआ कि उनकी बेटी को बहुत-से लोगों ने घेर लिया है और वहाँ खलबली मची हुई है तो दौड़े-दौड़े वे वहाँ आये। भेदवती ने विषय बताया और वज्रनाथ को दिखाते हुए कहा "इन्होने वचन दिया था कि इस सख्त तस्वीर को फोड़ने पर ये मुझे लाख अशर्फ़ियाँ पुरस्कार के रूप में देंगे।"

रामदास और लक्ष्मी को इस बात का विश्वास नहीं हुआ, इसलिए वे घूर-घूर कर वज्रनाथ को देख रहे थे तो वज्रनाथ ने सविनय उन्हें प्रणाम करते हुए कहा "लाख अशर्फ़ियाँ क्या, आप और भेदवती राजी हो तो इससे शादी करने के लिए भी मैं तैयार हूँ"।

यह बात सुनते ही शरमाकर भेदवती अपनी माँ के पीछे जाकर छिप गयी। रामदास और लक्ष्मी ने बहुत ही खुश होते हुए कहा "इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिये बेटे। इस भेदवती का हाथ लग गया तो मंत्रदंड के भी टुकड़े-टुकड़े हो गये। हम इस बात पर बहुत चिंतित थे कि कौन साहसी ऐसी लड़की से शादी करने आगे बढ़ेगा"।

थोड़े दिनों बाद वज्रनाथ-वेदवती की शादी वैभवपूर्वक हुई। किन्तु इसके बाद भी वेदवती के हाथों कितनी ही चीज़ें टूटीं, बरबाद हो गयीं, पर अब कोई भी उसे भेदवती के नाम से नहीं पुकारते। इसका पहला कारण है-अब वह अमीर है। दूसरा कारण है-उसका यह नाम ख़िताब माना जाने लगा। इस कारण सब अब उसे वेदवती के नाम से ही पुकार रहे हैं।

जैसा बाप, वैसा बेटा

माधव को देखने के लिए मंगल उसके गाँव आया। दोनों के मिले बहुत समय गुज़र गया। माधव संपन्न किसान था। उसके पिता ने खेती के साथ ही चावल और गेहूँ बेचने का व्यापार भी किया। वह अपने बेटे के लिए काफ़ी संपत्ति छोड़कर गया।

माधव का एक ही बेटा था। पढ़ाई में उसकी कोई रुचि नहीं थी। छोटे-छोटे काम भी ठीक तरह से कर नहीं पाता था। मंगल को लगा कि वह मंद बुद्धि का भी है।

बातों-बातों में मंगल ने माधव से कहा "तुम्हारा बेटा तो बहुत ही नादान लगता है। किसी एक अच्छे अध्यापक के यहाँ उसे क्यों नहीं पढ़ाते। पढ़-लिख लेगा तो सयाना हो जायेगा। आख़िर तुम्हारी जायदाद की देखभाल उसे ही तो करनी है। मुझे तो लगता है कि तुम उसकी ओर ध्यान नहीं दोगे तो वह इस लायक़ नहीं बनेगा। मेरी बात मानो और उसे पढ़ाओ-लिखाओ।"

इसपर माधव थोड़ा-सा नाराज़ हो उठा और कहने लगा "मंगल, यह मत समझना कि पढ़ा-लिखा ही अक़्लमंद है। मेरे पिता ने मुझे क्या खूब पढ़ाया? आख़िर मैंने पढ़ा भी क्या? मेरा बेटा देखने में नादान लगता है, पर है बहुत ही अक़्लमंद। चाहो तो तुम खुद ही आजमाओ।"

मंगल ने माधव के बेटे को अपने पास बुलाया और पूछा "बेटे, बताना कि यह क्या ऋतु है। गर्मी का मौसम है, वर्षा का या सर्दी का?"

"मैं नहीं जानता कि यह क्या मौसम है। दुकानों में जहाँ भी देखो आम ही आम बिक रहे हैं।"

उसके उत्तर पर मंगल ने मुस्कुराया और पूछा "बताना, आम कहाँ से आते हैं ?"

उसने तुरंत कहा "टोकरियों से"

दूसरे ही क्षण माधव ने अपने बेटे को गुरति हुए देखा और कहा "मंगल, तुमने ठीक ही कहा। मेरे बेटे की बुद्धि मंद ही है। बेचारे को मालूम नहीं कि आम हाट से आते हैं।"

'जैसा बाप, वैसा बेटा' अपने आप कहता हुआ मंगल मुस्कुरा पड़ा। - कमलनाथ

सम्राट अशोक

१२

(घोषणा किये बिना ही कि उसके बाद मगध सिंहासन का वारिस कौन है, बिन्दुसार की मृत्यु हो गयी। सुशेम को राजा की मृत्यु की ख़बर मिल गयी, फिर भी वह तक्षशिला से नहीं निकला। अशोक उज्ञयिनी से थोड़ी-सी सेना लेकर पाटलीपुत्र पहुँचा। उसे मार डालने का षड्यंत्र रचा गया, परंतु वह विफल हुआ। उस युद्ध में छहों राजकुमार मारे गये। बड़ों के निर्णय व आदेश के अनुसार उसने पिता की चिता में आग लगायी। प्रधानमंत्री, राजपुरोहित व सेनाध्यक्ष ने एकमत होकर निश्चय किया कि सब प्रकार से राजसिंहासन पर आसीन होने की योग्यता केवल युवराज अशोक में ही है, अतः उसी का राज्याभिषेक हो।)- बाद

मगध की प्रजा को इस बात का दुख हुआ कि महाराज बिंदुसार अब नहीं रहे। साथ ही उन्हें इस बात का भी अत्यंत दुख हुआ कि सभी राजकुमार मार डाल दिये गये। जब उन्हें मालूम हुआ कि राजकुमारों की हत्या के कारक वे स्वयं हैं, उन्हीं की दुराशा व दुष्टता ने उन्हें मौत की ओर ढकेला है तो वे थोड़ा-बहुत शांत हुए।

आधी रात के समय प्रधानमंत्री ने अशोक को राज्याधिकार सौंपा। अशोक सिंहासन पर आसीन हुआ परंतु उसने मुकुट नहीं पहना। उसने कहा "इस विषादपूर्ण परिस्थिति में मेरा मन राज्याभिषेक के लिए मान नहीं रहा है। मुकुटाभिषेक का यह समय नहीं है"।

मंत्रिगण, सेनाध्यक्ष आदि ने अशोक के अभिप्राय का अभिनंदन किया और अपनी सम्मति जतायी। किन्तु उनमें से कोई भी

महाराज की मृत्यु, उनके दहन-संस्कार के पहले लड़ी गयी लड़ाई, राजकुमारों का वध, फिर अशोक का राजगद्दी पर बैठना आदि समस्त विवरण उस दूत ने सुशेम को सुनाया।

"बाप रे, कैसी दुर्घटना घट गयी। उस दासी-पुत्र को जीवित रहने नहीं दूँगा। इसी क्षण अपने खड्ग से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। तुरंत पाटलीपुत्र निकलना चाहिये। दलनायकों को बुलाओ" सुशेम चिल्लाता रहा।

"महारानी ने आपको सावधान किया कि आप अब पाटलीपुत्र न आयें" हाथ जोड़कर दूत ने सविनय कहा।

"चुप रहो।" दूत को सुशेम ने नीचे ढकेला और कहा "मेरी बात चुपचाप सुनते रहो। मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई कुछ न बोले। मेरे पिताश्री पहले ही निर्णय ले चुके थे कि मैं ही होनेवाला महाराज हूँ। दहन-संस्कार के समय मैं उपस्थित नहीं हो सका, किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे मेरे पिताश्री के निर्णय को बदल डालें। ये दुष्ट कौन होते हैं, जो यों मनमानी कर रहे हैं। यह सब कुछ उस सियार भल्लाटक का षडयंत्र है।" कहता हुआ दुम दबाये गये सर्प की तरह फुफकारता हुआ उठ पड़ा।

प्रशांत रह नहीं सके। वे इस बात पर चिंतित होने लगे कि पता नहीं, कब बिन्दुसार का ज्येष्ठ पुत्र सुशेम तक्षशिला से आ धमकेगा और किस प्रकार का अन्यायपूर्ण अत्याचार करने पर तुल जायेगा।

तक्षशिला में सुशेम अब भी नर्तकियों की बातों का विश्वास करने लगा और समझने लगा कि अशोक न हिलने-डुलने की स्थिति में है, उसे पक्षाघात हो गया है। वह निश्चिंत होकर अपना समय गुज़ारने लगा। सुशेम की माँ ने फिर से रहस्यपूर्वक उसे पत्र भेजा, जिसमें उसने लिखा "तुम्हारे पिताश्री मर गये। किन्तु अब तुम पाटलीपुत्र मत आओ"। उस पत्र को पढ़ते ही क्षण भर के लिए सुशेम स्तंभित रह गया। दूत को वह नाराजी से देखने लगा, जो वह पत्र ले आया था।

★ ★ ★

प्रधानमंत्री, सेनाध्यक्ष आदि को जब मालूम हुआ कि युवराज सुशेम बड़ी सेना को लेकर पाटलीपुत्र की तरफ़ बढ़ रहा है तो वे बहुत घबराये। उनके मनों को तीव्र रूप से आघात पहुँचा। अब क्या किया जाए, इस

संबंध में चर्चा करने के लिए अशोक ने उन सबको बुलाया । सभी रहस्य-मंदिर में समाविष्ट हुए। अशोक ने उनसे कहा, "आप सब जानते ही होंगे कि सुशेम सेना-सहित निकल चुका है। इस स्थिति में आपकी क्या सलाह है ?"

किसी ने भी मुँह नहीं खोला। सबके सब चुप रह गये । छायी चुप्पी को तोड़ते हुए अशोक ने पुनः कहा "मित्रो, मौन रह जाने का यह समय नहीं है । आप मगध के श्रेयोभिलाषी हैं। मैं आपकी सलाहें चाहता हूँ" ।

"प्रभु, आप ही ने कहा था कि मेरा मुकुटाभिषेक अब न हो। फिर भी आप ही हमारे महाराज हैं। शत्रु जब हमला करने आता है तब राजा को जो करना चाहिये, वहीं आप कीजियेगा। महाराज होने के नाते आप ही को निर्णय लेना होगा" कहते हुए भल्लाटक ने अन्य मंत्रियों की ओर देखा। उन सबने एकसाथ कहा "युद्ध करना ही एकमात्र मार्ग है"।

"आपकी सलाहों के लिए धन्यवाद। मैं सुशेम को एक मौक़ा देना चाहता हूँ" अशोक ने कहा।

प्रधानमंत्री ने पूछा "कैसा मौक़ा ?"

"सुशेम शांत लौट जायेगा तो वह यथावत् तक्षशिला का राजप्रतिनिधि बनकर तक्षशिला में ही रह सकता है" अशोक ने कहा।

"राजप्रतिनिधि बनकर उनका आपके अधीन रहना नामुमकिन है। वे लौटकर जायेगें भी तो वे अपने को स्वतंत्र घोषित कर सकते हैं। इससे दूसरे भी ग़लत रास्ता अपना सकते
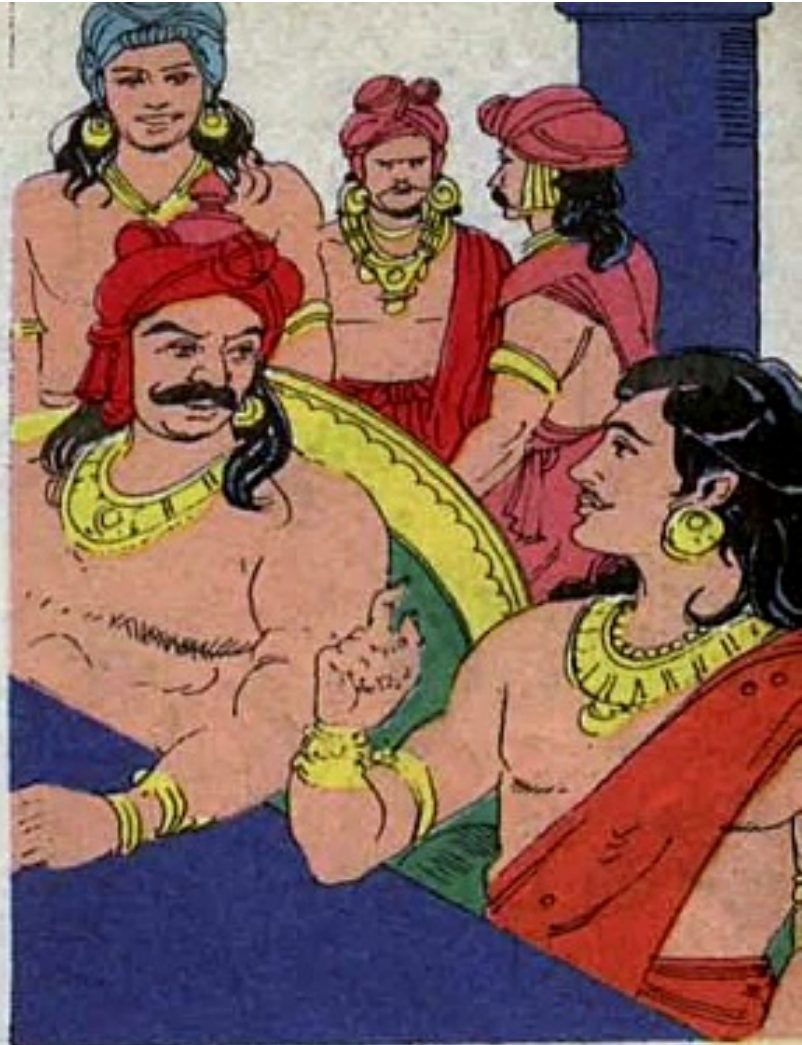
हैं। यों देश में आशांति फैल जायेगी और देश के विघटित होने की संभावना है।"

एक मंत्री ने यों अपना विचार व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने क्षण दो क्षणों तक मौन रहकर सोचा-विचारा और फिर कहा "मंत्री की बातों में कोई अतिशयोक्ति नहीं। उनकी बातें नपी-तुली बातें हैं। उनकी कल्पना अक्षरशः सत्य साबित होगी। हमारे राजा का उद्देश्य भी बहुत ही उदात्त है। सुशेम को यह मौका देने में भी कोई ग़लती नहीं है। वे तक्षशिला लौटें और राजप्रतिनिधि बनकर रहें, यथावत् राज्य-भार संभालें, अगर तक्षशिला लौटने के बाद वे अपने को स्वतंत्र घोषित करें, तब आवश्यक कार्रवाई कर सकते हैं।

अशोक ने पूछा, "हम यह विषय पहले

ही सुशेम को कैसे सूचित कर सकते हैं ?''

''यह भार मैं संभालूँगा। नगर की सरहद पर द्वारतोरणों का प्रबंध करूँगा और हाथ में पुष्पहार लेकर सुशेम का स्वागत करूँगा। एक दो प्रमुखों के अलावा आयुधधारी सैनिक कोई मेरे साथ न हों। सुशेम की समझ में आ जायेगा कि हम युद्ध करना नहीं चाहते हैं, शांति चाहते हैं। पास जाते ही उनके गले में पुष्पहार पहना दूँगा और उनका स्वागत करूँगा। फिर आपके प्रस्ताव पर प्रकाश डालूँगा।'' प्रधानमंत्री भल्लाटक ने कहा।

''आपका धैर्य सराहनीय है प्रधानमंत्री। फिर भी मुझे भय है कि आपकी जान का ख़तरा है'' अशोक ने कहा।

''जो काम मैं करने जा रहा हूँ, हाँ, वह जोखिम से भरा है। परंतु मुझे मारने से युवराज को क्या उपलब्ध होगा ? वह तो उनके प्राण के लिए ही ख़तरा साबित हो सकता है। मगध साम्राज्य की रक्षा तथा शांति के लिए मैं अपने प्राणों की बलि देने सन्नद्ध हूँ। इस कर्तव्य को निभाने में मेरे प्राण भी चले जाएँ, तो भी मुझे आनंद ही होगा''। प्रधानमंत्री ने कहा।

''आपकी राजभक्ति श्लाघनीय है। आपका साहस जयप्रद हो। यही मेरी आकांक्षा है'' अशोक ने कहा।

सुशेम नगर की सरहदों पर पहुँचे, इसके पहले ही प्रधानमंत्री भल्लाटक नगर के प्रवेश-द्वार पर पहुँचा। पुष्पहार लेकर सुशेम को देखते ही उसका स्वागत करने आगे बढ़ा।

जैसे-जैसे नगर के पास आता गया, वैसे-वैसे सुशेम का क्रोध बढ़ता जाने लगा। उसने साथियों से कहा ''जब तक राजभवन में प्रवेश करके सिंहासन पर आसीन नहीं हो जाऊँगा, तब तक रास्ते में जो भी रुकावट डालेगा, उसे मार डालो, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दो'' सैनिकों को सावधान करते हुए घोड़े पर आरूढ़ होकर तूफ़ान की तरह आगे बढ़ने लगा।

सुशेम जैसे ही द्वार पर पहुँचा, प्रधान मंत्री ने पुष्पमाला ऊपर उठायी और उसका स्वागत करने उसे रोकना चाहा। सुशेम क्षण भर के लिये रुक गया। पर चिल्ला उठा ''दुष्ट, तुम यहीं हो।'' कहकर उसपर तलवार चलायी।

''युवराज, रुक जाइये'' प्रधानमंत्री कुछ और कहने जा रहा था, किन्तु देखते-देखते सुशेम की तलवार ने उसके सिर को धड़ से

अलग कर दिया। सिर भूमि पर जा गिरा।

प्राकार से सटे भवन के ऊपरी भाग पर खड़े होकर दलनायक प्रधानमंत्री का पुत्र यह सब कुछ देख रहा था। उसने तुरंत आज्ञा दी तो दीवार के उस ओर खड़े सैनिकों ने टूटे बाँध के उमड़ते जल की तरह सुशेम को और उसकी सेना को चारों ओर से घेर लिया। सुशेम एक क़दम भी आगे बढ़ा नहीं सका। प्रधानमंत्री के पुत्र एक युवक दलनायक ने सुशेम का सिर काट डाला। तक्षशिला से आयी सेना झुक गयी। सैनिकों ने क्षमा माँगी और मगध-सेना में मिल गये।

अशोक को इस बात पर अपार दुख हुआ कि शांति के इच्छुक, निरायुध खड़े प्रधानमंत्री की यों दारुण हत्या हुई। उनके स्थान पर अशोक ने रथगुप्त को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। अब शत्रुशेष नहीं रहा, इसलिए राज्य में शांति-सुख की स्थापना हुई। अशोक ने प्रजा के लिए आवश्यक समस्त सुविधाओं का प्रबंध किया। उन्हें कोई कमी होने नहीं दी। जनता को भी अशोक की शासन-पद्धति बहुत ही अच्छी लगी। वृद्ध प्रजा कहती रहती कि शासन संभालने में उनका राजा उतना ही समर्थ है, जितना चंद्रगुप्त था।

अशोक के मुकुटाभिषेक का शुभ मुहूर्त ज्येतिषियों ने निकाला। किन्तु इस संबंध में प्रमुखों के सम्मुख एक समस्या उठ खड़ी हो गयी। विदीशा देवी बौद्ध मत की है। उसे महारानी के रूप में स्वीकार करने के लिए आस्थान पुरोहितों ने सुमुखता नहीं दिखायी। क्योंकि उसे हिन्दू धर्म संप्रदायों के प्रति विश्वास नहीं है। अलावा इसके, हाल

ही में उसका स्वास्थ्य बिल्कुल ख़राब हो गया। वैद्यों ने सलाह दी कि दूर प्रांतों तक यात्रा करना उसके लिए ख़तरनाक साबित हो सकता है। इसे दृष्टि में रखते हुए मुकुटाभिषेक को टाला भी नहीं जा सकता। क्योंकि ज्योतिषियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ऐसी शुभ घड़ियाँ पाँच वर्षों के बाद ही आयेगीं। किन्तु रानी के बिना मुकुटाभिषेक-उत्सव मनाया भी नहीं जा सकता।

इन सारे सत्यों को दृष्टि में रखते हुए नूतन प्रधानमंत्री रथगुप्त ने चंद्रगुप्त से कहा, "प्रभू, आपके विषय में ऐसी जल्दबाजी कर रहा हूँ, इसके लिए मुझे क्षमा कीजिये। यह बात आपसे छिपी नहीं है कि विदीशा देवी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आपके पुत्र युवराज महेंद्र को भी बौद्ध धर्म के ही

सिद्धांत सिखाये जा रहे हैं। आप ही सोचिये कि जिस युवराज की युद्ध में आस्था नहीं, वे भविष्य में राज्य की रक्षा कैसे कर सकेंगे ? आपको विदित ही है कि राज्य वीरभोज्य है। राज्य के भविष्य को दृष्टि में रखते हुए किसी एक और कन्या से विवाह करेंगे तो अच्छा होगा। इसके सिवा कोई और उपाय मुझे नहीं सूझता।''

अशोक ने मंत्री की सलाह मानने से इनकार कर दिया। किन्तु विषय की जानकारी के बाद विदीशा देवी ने यश द्वारा संदेश भेजा ''दिन ब दिन मेरा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। राजपत्नी होकर अपने कर्तव्य निभा नहीं सकूँगी। किसी और राजकुमारी से विवाह रचाना ही आपके लिए श्रेयस्कर होगा।'' उसने अपनी प्रार्थना को स्वीकार करने ज़ोर पर दिया। आख़िर अशोक ने दूसरी शादी करने की अपनी स्वीकृति दी। आनंद मित्रा से उसका विवाह हुआ। कुछ दिनों के बाद ज्योतिषियों से निर्णीत शुभमुहूर्त पर अशोक का मुकुटाभिषेक-उत्सव वैभवपूर्ण संपन्न हुआ।

परंतु अशोक विदीशादेवी तथा अपने दोनों पुत्रों को भुला नहीं सका। क्रमशः उसकी चिंता तीव्र होती गयी, जिसके कारण शासन संबंधी कार्यों के प्रति उसकी आसक्ति घटती गयी।

अशोक के रुख को देखते हुए प्रधानमंत्री ने सेनाधिपति की सलाहें माँगीं। उसने सेनाधिपति से बताया ''हमारे राजा अपनी पहली पत्नी विदीशा देवी के बारे में ही सदा सोचते रहते हैं। राज्य-संबंधी कार्यों के प्रति उदासीनता दिखा रहे हैं। अगर ऐसा ही होता रहा तो इसपर आश्चर्य करने की भी आवश्यकता नहीं होगी कि वे अकस्मात् सिंहासन को त्याग दें और उज्जयिनी लौटकर प्रशांत जीवन बिताने का निर्णय ले लें। हमारा कर्तव्य है कि उनमें राज्य की आकांक्षा जगाएँ, अधिकार की आग भड़काएँ और विजयोत्साह को उत्पन्न करें। युद्धों में विजय प्राप्त करने पर ही राजा में उत्साह बढ़ता है। शत्रु राजाओं को पराजित करने से जो आनंद किसी भी राजा को मिलता है, वह वर्णनातीत है, अद्भुत व अनिर्वचनीय है'' प्रधानमंत्री रथगुप्त ने सेनाधिपति वीरसिंह से कहा।

''आपके विचार समुचित लग रहे हैं।

मौक़ा पाकर राजा में राज्य को विस्तृत करने की आकांक्षा जगाना ज़रूरी है'' सेनाधिपति ने कहा।

इसी समय पर समाचार मिला कि कलिंग राजा बिना वारिस के ही मर गया। कुछ उच्च अधिकारी ही कलिंग की शासन - व्यवस्था की देखभाल कर रहे हैं।

एक दिन अशोक जब सायंकाल उद्यानवन में टहल रहा था, तब प्रधानमंत्री ने उससे कहा ''महाराज, चंद्रगुप्त मौर्य तथा बिंदुसार महाराज ने कलिंग को अपने अधीन करने के सपने देखे। परंतु उनका सपना साकार नहीं हो पाया। कलिंग सुसंपन्न राज्य है। वाली, सुमत्रा जैसे द्वीपों में बह व्यापार चला रहा है। एक राजा के अधीन विविध वंशों के शासकों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध वहाँ क़ायम है। उनमें एकता की भावना सुदृढ़ है। अब राजा नहीं रहे, इसलिए शासकों के बीच एकता का विच्छिन्न हो जाना तथ्य है। कलिंग को जीतने का इससे बढ़कर सुवर्ण अवकाश प्राप्त नहीं होगा।''

सेनाधिपति भी इतने में वहाँ आया।

अशोक ने मंत्री की बातें सुनीं, किन्तु कोई उत्तर नहीं दिया। मौन होकर सोचने लगा।

''हमारी सेना ने दीर्घ काल से कोई युद्ध नहीं किया। अगर यही सिलसिला जारी रहा तो हमारे सैनिकों के सुस्त हो जाने का ख़तरा है। सेना को अक्सर युद्ध-प्रशिक्षण चाहिये। हो सकता है, इसके अभाव में भविष्य में हम शत्रुओं का सामना करने की भी शक्ति खो बैठें''। सेनाधिपति ने कहा।

''ठीक है, कलिंग पर हमला करने के लिए आवश्यक प्रबंध कीजिये। पहले हमारे गुप्तचरों को कलिंग भेजिये। उनका पहला काम होगा, यह जानना कि वहाँ की सेना का बल क्या है और उनकी कितनी संख्या है, उनके पास क्या-क्या हथियार हैं। बाद वहाँ के शासकों में ऐसा वातावरण उत्पन्न करना होगा, जिससे वे एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखें।'' अशोक ने कहा।

''जो आज्ञा प्रभू, आपकी आज्ञा का पालन होगा''। प्रधानमंत्री ने कहा।

कलिंग पर चढ़ाई करने के लिए मगध सन्नद्ध होने लगा।

- सशेष

सम्मान की योग्यता

विक्रमार्क को निराशा छू नहीं पायी। अपने लक्ष्य में असफल होते हुए भी वह नहीं थका। अपने कर्तव्य-पालन में कोई ढिलाई आने नहीं दी। उसमें उत्साह व तत्परता दुगुने हो गये। वह पुनः पेड़ के पास गया और पेड़ पर चढ़ कर शव को नीचे उतारा। शव को अपने कंधे पर डाल लिया और मौन हो यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि इस घने अंधकार में, जहाँ कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा है, क्यों इतने कष्ट झेल रहे हो, क्यों इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो ? आखिर तुम्हारा कौन-सा ऐसा ध्येय है, जिसे साधने के लिए इतना सब कुछ कर रहे हो ? राजनैतिक विषयों में सलाहें देने के लिए राजा के पास मंत्री होते हैं। युद्ध-व्यूहों में साथ देने के लिए सेनापति होते हैं। ऐहिक तथा आध्यात्मिक चिंतनों में जब संदेह जागते

बैताल कथा

हैं, तब उन संदेहों को दूर करने के लिए पंडित होते हैं। मेरा विचार है कि तुम्हारे सभास्थल में ऐसे दिग्गजों की कोई कमी नहीं होगी। किन्तु इनमें से कुछ तो अवश्य होंगे ही, जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए हेतु आधार विरुद्ध समस्या का परिष्कार किसी प्रकार करते हैं, उससे संतृप्त होते हैं और इसके लिए चित्र-विचित्र परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं, तरह-तरह के कार्य कर बैठते हैं। मुझे शंका हो रही है कि ऐसे व्यक्तियों के दुष्प्रभाव के तुम भी शिकार हुए हो। अगर मेरा कहा सच हो तो तुम्हें सावधान करने के लिए पैंतल नामक एक मूर्ख की कहानी सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यान से सुनो''। बेताल फिर यों कहने लगा।

बहुत पहले शतभोज नामक एक राजा रहा करता था। वह कलाप्रिय था। उसके आस्थान में विविध शास्त्रों में निष्णात पंडित हुआ करते थे। शतभोज जहाँ भी जाता था, अपने साथ पंडितों को भी ले जाता था। फुरसत मिलने पर उनसे चर्चाएँ करता था और आनंद लूटता था।

उस राज्य में प्रलोम नामक गाँव प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रख्यात था। शतभोज अपने पंडित परिवार के साथ एक बार उस गाँव में गया। गाँव के बाहर उसने डेरे डलवाये। राजा तथा राज्य परिवार की सहायता करने के लिए गाँव के सब प्रमुख आगे आये।

प्रलोम गाँव में पैंतल नामक एक मूर्ख था। उसका विश्वास था कि संसार में कोई ऐसा विषय नहीं, जिसे वह नहीं जानता हो। ग्राम के पंडित भी उससे वाद-विवाद के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि वे उसे मूर्ख व शुष्क वाद करनेवाला समझते थे। वह जो भी कहता, चुपचाप सुन लेते थे। इससे पैंतल में यह विश्वास और जम गया कि मुझ जैसा बुद्धिमान कोई है नहीं।

पैंतल की प्रमीला नामक एक बहन थी। देखने में देवलोक से उतरी अप्सरा लगती थी। उससे शादी करने के लिए गाँव के बहुत युवक सपने देखा करते थे। वे सब के सब मीठी-मीठी बातें करके पैंतल को खुश करने के उद्देश्य से उसे आसमान पर चढ़ाते थे। इस कारण पैंतल का घमंड और बढ़ गया। पैंतल को मालूम हुआ कि शतभोज महाराज गाँव के बाहर डेरे डालकर रह रहे हैं। उसे यह भी मालूम हुआ कि उनके साथ

महान पंडित भी आये हुए हैं। यह जानते ही वह तुरंत पंडितों से मिला और उनसे कहा "महाशयो, हमारे गाँव के पंडितों ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया कि गाँव में मुझसे बड़ा पंडित है नहीं। मेरे गाँव के युवक मेरी भरपूर प्रशंसा कर रहे हैं। मैंने जीवन में बहुत कुछ साधा, किन्तु मेरी एक इच्छा शेष रह गयी। मेरी चाह है कि आप जैसे आस्थान कवियों से सम्मानित किया जाऊँ"।

पंडितों ने उसे बहुत बड़ा पंडित मानकर जो-जो शास्त्र वे जानते थे, उनमें से उससे कुछ प्रश्न पूछे। उसकी परीक्षा ली। उन प्रश्नों के उसके दिये उत्तरों को सुनकर उन्होंने कहा, "तुम बहुत बड़े मूर्ख हो। तुम्हारा मज़ाक उड़ाने के लिए ही सभी तुम्हारी तारीफ़ के पुल बाँध रहे हैं"। फिर उन्होंने भी उसपर व्यंग्य-बाण कसे।

पैंतल नाराज़ हो उठा। उसने कहा "आज तक किसी ने मेरी परीक्षा नहीं ली। किसी ने यों मज़ाक भी नहीं उड़ाया। मैंने तो आपसे इतना ही कहा था कि मेरा सम्मान करो। प्रश्न पूछने के लिए मैंने थोड़े ही आपसे कहा था। इतना भी आपको ज्ञान नहीं। मेरी समझ में नहीं आता कि आप जैसे अज्ञानियों को क्यों राजा ने अपने आस्थान में स्थान दिया।" पंडित उसकी तीखी बातों पर नाराज़ नहीं हुए। उन्होंने शांतिपूर्वक कहा "बंधु, तुम्हारे इस संदेह की निवृत्ति हम कर नहीं सकते। बगल के डेरे में महाराज हैं। उन्हीं से पूछ लेना।"

यों इस प्रकार पैंतल ने राजा का दर्शन किया। शतभोज के बहुत ही सुंदर रूप पर मुग्ध होकर उसने कहा, "प्रभु, आप इतने अच्छे लग रहे हैं। परंतु आपने अपने आस्थान में ऐसे अयोग्य पंडितों को क्यों स्थान दिया?"

शतभोज उसकी बातों से समझ गया कि वह बुद्धिहीन है, मूर्ख है। उसने पैंतल से कहा, "बताओ कि मेरे पंडितों में तुम्हें क्या कमी दिखायी पड़ी।" कुतूहल-भरे स्वर में राजा ने पूछा।

"उन्होंने मेरा सम्मान करने से इन्कार कर दिया। वही उनकी कमी है। आप उन्हें सबक सिखाइये और मेरा सम्मान करवाइये। अथवा उन्हें आस्थान से निकाल दीजिये।" पैंतल ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया।

"तुमने जैसा कहा, वैसा अगर मैं नहीं करूँगा तो तुम क्या कर लोगे?" शतभोज ने उसे उकसाते हुए कहा। पैंतल की समझ

में तुरंत नहीं आया कि इसका क्या जवाब दिया जाए। वह कुछ सोचे, इसके पहले ही राजा ने कहा, "बताओ, सोच में क्यों पड़ गये। बोलो, तुम्हारा कहा मैं नहीं करूँगा तो तुम क्या करोगे ?"

गाँव के कुछ युवक कभी-कभी ऐसे ही प्रश्न पूछकर उसे चिढ़ाते रहते थे। तब वह उन्हें धमकाता रहता था कि अपनी बहन की शादी तुमसे नहीं करूँगा। तब वे सब उसका कहा मान जाते थे। पैंतल को यह बात याद आयी और कहा, "मैं नहीं बताऊँगा कि मैं क्या करनेवाला हूँ। क्या नहीं करूँगा, बता दूँगा। मेरी बात सुनते ही बस, महाराज भी ऊपर से नीचे उतर आयेंगे।"

"ठीक है, वही बता" महाराज ने कहा।

"अपनी बहन की शादी आपसे नहीं करूँगा"। पैंतल की यह धमकी सुनकर शतभोज हँस पड़ा। उसमें कुतूहल जगा कि ऐसे भाई की बहन को भी देखूँ और जानूँ कि वह और कितनी बड़ी मूर्ख है। उससे बातें करके अपना मन बहलाऊँ। इस उद्देश्य से राजा ने कहा, "तुम्हारी बहन को एक बार देखूँगा। फिर तुम्हारे सम्मान की बात पर सोचूँगा। ठीक है न ?"

पैंतल ने अपनी सम्मति दी। शतभोज उसके साथ उसके घर गया और उसकी बहन प्रमीला के सौंदर्य को देखकर दिग्भ्रांत रह गया। उसे लगा कि देवलोक की अप्सरा भी उसके सामने कुछ है नहीं। थोड़ी देर उससे बातें करने के बाद राजा समझ गया कि वह अपने भाई की तरह मूर्ख नहीं है। साथ ही उसका ख़ास लोक-ज्ञान भी है।

"तुम्हारी जैसी अति सुंदर कन्या महारानी बने, यही न्यायसंगत है। क्या तुम्हें मुझसे विवाह करना पसंद है ?" शतभोज ने पूछा।

पैंतल ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "प्रभु,

अपने आस्थान के पंडितों से मेरा सम्मान करवाइये। तभी यह विवाह संभव हो सकता है। क्या आपको स्वीकार है ?''

शतभोज ने कहा, ''हम दोनों को यह रिश्ता पसंद है तो बीच में पड़नेवाले तुम होते कौन हो ? चाहो तो थोड़ा बहुत धन दूँगा। उससे संतृप्त हो जाओ। बेकार की माँगें पेश करके अपनी ज़ान ख़तरे में मत डालो ''।

प्रमीला ने राजा को ऐसा कहने से रोकते हुए कहा ''प्रभू यह मेरा सगा बड़ा भाई है। उसकी इच्छा कोई बहुत बड़ी इच्छा नहीं कही जा सकती। आपके लिए यह कोई असाध्य कार्य भी नहीं है। आपको अगर सहर्ष, हृदयपूर्वक स्वीकार करना हो तो क्या इतना छोटा-सा काम भी मेरे लिए नहीं कर सकते ?''

शतभोज को उसकी बातें सही लगीं। उसने उसकी प्रार्थना मान ली। डेरे में लौटकर उसने पंडित परिवार को बुलाया और जो हुआ, उन्हें सुनाया। फिर कहा, ''प्रमीला पहली ही नज़र में मुझे बहुत ही सुँदर लगी, हम दोनो की शादी होनी हो तो आप लोगों का सहयोग मुझे चाहिये''।

पंडित एक-दूसरे का मुख देखते रहे। वे मन ही मन सोचने लगे कि पैंतल जैसे मूर्ख का सम्मान हम जैसे महान पंडितों के हाथों हुआ तो क्या जग महाराज के कला-पोषण का मजाक नहीं उड़ायेगा ? एक स्त्री के लिए राजा का यों गिर जाना सब प्रकार से अपमानजनक ही तो है।

पंडितों ने राजा से कह दिया कि यह काम हमसे नहीं होगा। उन्होने स्पष्ट कर दिया कि राजा ऐसा करने पर हमें मजबूर करेंगे तो हम आस्थान से हट जायेंगे, आस्थान पंडित बनकर नहीं रहेंगे। शतभोज पंडितों से कुछ

का सम्मान करना पंडित धर्म हो ही नहीं सकता।'' पंडितों ने कहा।

''मैं साबित करूंगी कि मेरा भाई इस सम्मान के योग्य है। तब क्या आप उसका सम्मान करेंगे ?'' प्रमीला ने पूछा।

''तुम्हारे भाई को किसी भी विषय का ज्ञान नहीं है। उसकी योग्यता कैसे साबित कर सकती हो ?'' पंडितों ने पूछा।

प्रमीला ने मुस्कुराते हुए कहा ''अपने भाई की योग्यता को साबित करने के लिए यह कोई ज़रूरी नहीं है कि वह किसी क्षेत्र में, किसी विषय में ज्ञानी हो। मेरा लोक-ज्ञान ही पर्याप्त है''। बाद उसने वे भेटें दिखायीं, जिन्हें अनेकों देशों के राजकुमारों ने उससे विवाह करने की आशा में भेजीं थीं। वे भेटें अलग-अलग पेटियों में रखी हुई थीं।

कह नहीं पाया। प्रमीला को भुला भी नहीं सका। मन ही मन दुखी होता रहा। यह विषय प्रमीला को मालूम हुआ। उसने पंडित परिवार को ख़बर भेजी और जब वे सब उसके घर आये तो उसने उनसे कहा ''सुना कि आप महापंडित हैं। बड़ी विचित्र बात है कि आपका पांडित्य आपके राजा के काम नहीं आया''।

पंडित चकित होकर बोले, ''हमारा पांडित्य सब प्रकार से राजा के उपयोग में आ रहा है। मूर्ख की बहन के विवाह के विषय मात्र में हमारा पांडित्य राजा के उपयोग में आ नहीं रहा है''।

प्रमीला ने पूछा ''क्यों ?''

''यह विवाह होना हो तो हमें तुम्हारे बड़े भाई का सम्मान करना होगा। अयोग्य

एक पेटी में नीम की सींकी थी। एक युवक ने उसे प्रशांत देश से भेजा था। वहाँ चंदन बड़ी मात्रा में मिलता है। चंदन का उपयोग हर काम के लिए वहाँ होता है। नीम का पेड़ बहुत ही कम देखने को मिलता है। नीम की सींकी वहाँ बहुत ही मूल्यवान है।

एक और पेटी में तांबे की अंगूठी थी। उस देश में सोने की अनगिनत खानें हैं। रसोई के लिए आवश्यक बरतन भी सोने के ही होते हैं। किन्तु आभूषण बनाने के लिए वे सोने को उपयोग में नहीं लाते। तांबे के आभूषण बनते हैं। वे ही श्रेष्ठ आभूषण माने जाते हैं। तांबे के गहनों पर जल्दी ही जंग लग जाता है, इसलिए वहाँ लोह मिश्रणों की भी खोज हुई है, जिससे तांबे के गहने नहीं बिगड़ते। तांबे में थोड़ा-सा सोने का मिश्रण

होता है। ऐसी ही अंगूठी है यह। इस देश की सोने की अंगूठी से उस देश में बनी तांबे की अंगूठी का ही वहाँ अधिक महत्व है।

एक और पेटी में बहुत ही सुंदर दिखनेवाला काले कोयले का स्फटिक है। उस देश में जहाँ देखो, वहाँ वज्र ही वज्र हैं। पर कोयला बहुत ही कम मिलता है। इसलिए कोयले के इस स्फटिक का उस देश में बड़ा ही मूल्य है। इसका वहाँ कितना मूल्य है, शब्दों में कहा नहीं जा सकता।

यों पंडितों को प्रमीला ने सब भेंटे दिखायीं। रेशमी वस्त्रों से भी अधिक मूल्यवान हाथ से बने कपड़े दिखाये। कला खंडों से भी महत्वपूर्ण और प्रभावशाली मानी जानेवाली टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के चित्र दिखाये। इस प्रकार के महत्वपूर्ण वस्तुओं को देखकर पंडितों को बड़ा अचंभा हुआ। उन्होंने कहा कि ऐसी वस्तुओं की विशिष्टता मात्र हमने कहीं-कहीं सुनीं, किन्तु आज प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारे पास इन वस्तुओं को देखने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुम बड़ी ही भाग्यशाली हो''।

''आप सब महापंडित हैं। अब ही सही, मेरे भाई का मूल्य जानिये। उसका सम्मान कीजिये। महाराज से मेरा विवाह रचाइये'' प्रमीला ने विनती की।

''तुम्हारी बातें बड़ी ही विचित्र लग रही हैं। इन वस्तुओं को दिखाने मात्र से तुम्हारे भाई को सम्मान की योग्यता कैसे हासिल हो सकती है? ज़रा खुलासा बताना'' पंडितों ने कहा। प्रमीला ने हाथ जोड़कर कहा, ''महोदय, आप पंडित हैं, प्राज्ञ हैं। मेरी परीक्षा करने के उद्देश्य से ही आप यह प्रश्न

पूछ रहे हैं। मेरा विश्वास है, अब तक बात आपकी समझ में अच्छी तरह से आयी होगी''। प्रमीला ने कहा।

पंडित तुरंत सोच में पड़ गये। एक-दो क्षणों के बाद एक वृद्ध पंडित ने मुस्कुराते हुए अपना हाथ उसके सिर पर रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा ''कन्ये, तुम्हारी बातों से हमारा अहंकार टूट गया। हम अगर सूक्ष्म रूप से सोचते कि एक मूर्ख का सम्मान कैसे और क्यों, तो हमारे महाराज को क्षण भर के लिए भी दुख न होता। मूर्ख के सम्मान की योग्यता के बारे में आज तक और किसी ने इस प्रकार चमत्कार-पूर्ण बातें नहीं कहीं। तुम जैसी बुद्धिमान स्त्री का महारानी बनना प्रजा का सौभाग्य है। हमने निश्चय किया कि तुम्हारे भाई का सम्मान करें।'' कहते हुए उसने अन्य

पंडितों की ओर देखा ।

सभी पंडितों ने जान लिया कि प्रमीला उसे प्राप्त भेंटों को दिखाकर तद्वारा क्या कहना चाहती है । उन सबने सिर हिलाया और तालियाँ बजायीं ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा, "राजन्, पंडितों ने मान लिया कि मूर्ख भी सम्मान के योग्य है । शतभोज के आस्थान के ऐसे पंडितों के बारे में क्या कहना होगा । लगता है कि उनका राजा प्रमीला से विवाह न कर पाने के कारण दुखी है, इसीलिए अपने राजा को संतुष्ट देखने के लिए उन्होंने एक मूर्ख के सम्मान का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । मूर्खता का सम्मान करना पांडित्य का अपमान करना ही तो है । जो भी हो, समस्या का शीघ्र परिष्कार करने के उद्देश्य से ही इन पंडितों ने हेतु आधार विरुद्ध यह असंगत, यह असंबद्ध निर्णय ले लिया है । मैं जानना चाहूँगा कि क्या प्रमीला ने अपनी विचित्र भेटें दिखाकर पंडितों से कुछ कहना चाहा ? नहीं तो उन्हें भ्रम में डालने के लिए ही प्रमीला ने यह चाल चली ? वृद्ध ने उसकी चमत्कार-भरी बातों की वाहवाही की और अन्य पंडितों ने एकसाथ सिर हिलाये । यह सब कुछ क्या हास्यास्पद नहीं लगता ? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे ।"

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों को दूर करते हुए कहा "लोक में बिरले ही दिखनेवाली हर वस्तु आकर्षक होती है । आकर्षण का अर्थ है, प्रशंसनीय व मूल्यवान । उन-उन देशों में अत्यंत मूल्यवान और अपने देश में बिल्कुल ही मूल्यहीन वस्तुओं को दिखाते हुए प्रमीला ने चमत्कारिक ढंग से जो बताया, वह यह कि बिरले ही पाये जानेवाले महापंडितों की तरह वज्र समान मूर्ख भी सम्मान के योग्य हैं । वृद्ध पंडित की समझ में आ गया कि पैंतल का सम्मान करके वे इस बात का धृवीकरण कर रहे हैं कि वह महामूर्ख है । इसीलिए उसने यह सत्य भी घोषित किया कि प्रमीला जैसी विवेकशील महिला महारानी बनेगी तो प्रजा और सुखी होगी ।"

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा । **आधार - विवेक सूरमा की रचना**

सुंदरबन और उसके आगे

वर्णन : मीरा नायर ◆ चित्रकार : गौतम सेन

कलकत्ता से हम **अछीघाट** (अछीपुर) रवाना होते हैं. भारत में चीनियों की पहली बस्ती यहीं पर 1840 वाले दशक में बसी थी. इसलिए यह 'चाइना टाउन' के नाम से ज्यादा प्रसिद्ध है. जहां हुगली या गंगा बंगाल की खाड़ी से मिलने के लिए दक्षिण को मुड़ती है, उससे ठीक पहले डायमंड हार्बर पर वह चौड़ी हो कर नदीमुख का निर्माण करती है. कभी ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाज यहां लंगर डाला करते थे. मगर अब तो इसका उपयोग मोटर-बोट और देसी किश्तियां करती हैं, जो यात्रियों को नदीमुख के आर-पार पहुंचाती हैं.

डायमंड हार्बर के दक्षिण में दुनिया का सबसे विशाल डेल्टा प्रदेश है, जिसका निर्माण गंगा की तथा उसके पूर्व में ब्रह्मपुत्र की असंख्य छोटी-बड़ी धाराओं ने किया है. इन नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी अपार गाद-मिट्टी से यहां नयी जमीन और नये टापुओं का निर्माण बड़ी तेजी से होता रहता है, खास करके डेल्टा के पूर्वी हिस्से में समुद्र की दिशा में.

डेल्टा क्षेत्र में कलकत्ता से बंगाल की खाड़ी तक के प्रदेश में विशाल ज्वारीय जंगल और दलदली इलाके हैं, जो बांग्लादेश तक चले गये हैं. इनका क्षेत्रफल 15,500 वर्ग कि.मी. है और ये दुनिया के सबसे विशाल 'गरान' (मैनग्रोव) हैं.

मुखौटा पहने मछुआरे

इन जंगलों का नाम 'सुंदरबन' है, जिसके दो अर्थ किये जाते हैं – 1. सुंदर जंगल और 2. सुंदरी नामक वृक्षों के वन. सुंदरबन एक तरह से कलकत्ता का फेफड़ा है, क्योंकि वह कलकत्ता के लिए आक्सीजन बनाने का काम करता है. ये वन प्राकृतिक बंद का भी काम करते हैं. अगर ये गरान-वन न हों तो बंगाल की खाड़ी में ज्वार के समय उठने वाली उत्ताल तरंगें कलकत्ता और उसके आस-पास के ज्यादातर इलाके को लील ही जाएं.

जैविक रोशनी विखेरनेवाले अरबों सूक्ष्म जीव सरदियों में रात के समय इन गरान-वनों को जगमगाता परीलोक बना देते हैं. गरान-वनों में वृक्षों की भाले जैसी नुकीली जड़ें पानी से ऊपर उठी रहती हैं और हवा सोख कर वृक्ष को आक्सीजन पहुंचाती हैं. मल्लाह इन भालों से सावधानी से बचते हुए अपनी नावें खेते हैं. खारी दलदली भूमि में सुंदरी, गोड़ान, गेरूवा व धुंधुल के वृक्ष और केवा घास उगती हैं.

इतने विविध प्रकार के वन्य जीव दुनिया के किसी अन्य प्रदेश में शायद ही एक जगह मिलते हों. शानदार रायल बंगाल टाइगर, खौफनाक मगरमच्छ, शार्क मछलियां, दुर्लभ साल्वेटर छिपकलियां, तरह-तरह की चिड़ियां, सूंस, मछलियां, कछुए, सांप, मधुमक्खियां. केकड़े, घोंघे तथा कितनी ही किस्म के रीढ़दार और बगैर रीढ़ के जीव का यहां निवास करते हैं.

दो 'रायल बेंगाल टाइगर'.

सुंदरवन में बाघों की संख्या 300 से 500 तक कूती गयी है. दुनिया के अन्य किसी प्रदेश में बाघों की इससे बड़ी आवादी नहीं है. ये बाघ जल-थल दोनों पर जीने के अभ्यस्त हैं और लंबी दूरी तक तैर सकते हैं. सुंदरबन के निवासी, जो कि ज्यादातर शहद बटोरने या मछली पकड़ने का धंधा करते हैं, यह मान कर चलते हैं कि उन पर बाघ किसी भी समय हमला कर सकते हैं. इनमें से कई तो अक्सर अपने सिर के पीछे की ओर आदमी के चेहरे का मुखौटा पहने रहते हैं. ऐसा माना जाता है कि बाघ आदमी पर आगे से प्रायः हमला नहीं करते. जंगल में जाने से पहले ये लोग बाघों के देवता और इन वनों के अधिष्ठाता **दक्षिणी** राय को स्मरण करके उनका आशीर्वाद मांगते हैं.

सुंदरवन की अंधाधुंध कटाई हो रही थी. अंत में इसे संरक्षित इलाका घोषित कर दिया. हैलिडे,

सजनाखाली और लोथियन द्वीपों को अभयारण्य बना दिया गया है. 1972 में बाघ परियोजना (टाइगर प्रॉजेक्ट) आरंभ हुई. बाघों के शिकार पर बंदिश लगा दी गयी और उनके उजड़ते निवासस्थलों की रक्षा के लिए कदम उठाये गये. 1984 में इन गरान-वनों को राष्ट्रीय उद्यान तथा बाघ अभयारण्य में बदल दिया गया. सुंदरवन दुनिया के पहले गरान-वन हैं, जिनकी प्रबंध-व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग से की जा रही है और जिन्हें विश्व-विरासत स्थलों में शामिल किया गया है.

गंगा के मुहाने पर सुंदरबन में जो 102 टापू हैं, उनमें सबसे बड़ा है – **सागर द्वीप.** यहां लगभग सारे गरान-वन काट डाले गये थे. कवि रवीन्द्रनाथ यहां अक्सर सैर के लिए आया करते थे. कहते हैं कि उन्होंने अपने बहुत-से साहित्यिक पत्र और गीत यहीं लिखे थे.

टापू का धुर दक्षिणी छोर **गंगासागर** कहलाता है. मकर सक्रांति (14 जनवरी) के दिन हजारों हिंदू तीर्थयात्री यहां गंगा में नहाने के लिए एकत्र होते हैं. स्नान के बाद वे कपिलमुनि के मंदिर में दर्शन और पूजा करते हैं. इस अवसर पर यहां तीन दिन का मेला भरता है.

सन 1824 में स्थापित एक प्रकाशस्तंभ यहां पर है, जो तब से निरंतर काम कर रहा है. यह समुद्र की सतह से 26 मीटर ऊंचा है. इसकी रोशनी साफ मौसम में 16 कि.मी. दूर से देखी जा सकती है.

कलकत्ता से 1,000 कि.मी. दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित है **पोर्ट ब्लेयर** – अंडमान और निकोबार की राजधानी. ये द्वीप-समूह दक्षिण भारत के पूर्वी तट के समांतर स्थित हैं और बीच-बीच में कटी हुई पट्टी जैसे 780 कि.मी. की लंबाई में धनुष के आकार में फैले हुए हैं. सबसे उत्तरी टापू **लैंडफाल** म्यांमा से 190 कि.मी. दूर है. सबसे दक्षिणी टापू **ग्रेट निकोबार** से इंडोनेशिया की दूरी सिर्फ 150 कि.मी. है.

गंगासागर पर कपिलमुनि का प्रसिद्ध मंदिर.
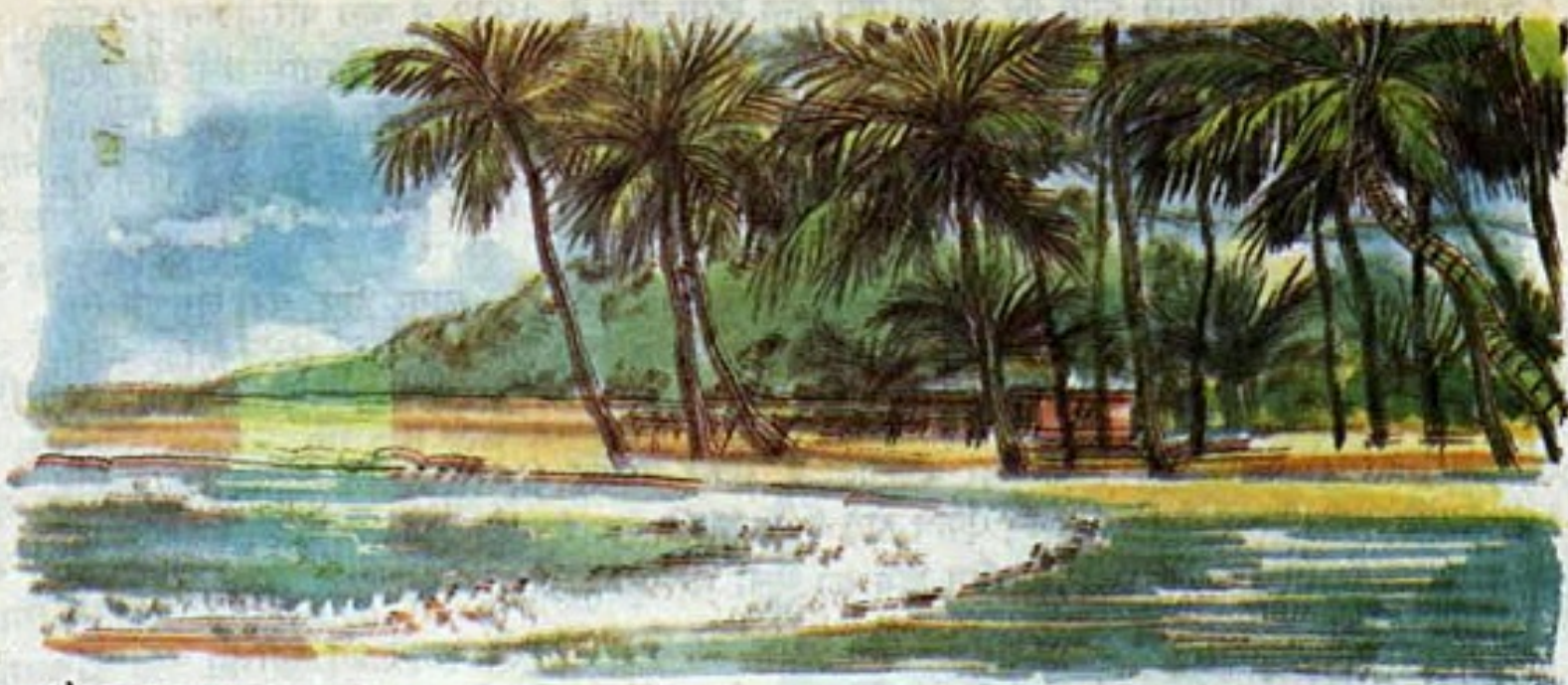
अंडमान का एक बालूतट

कहते हैं कि अंडमान नाम **हंडुमान** शब्द से बना है. मलय लोग इन द्वीपों से दीर्घकाल से परिचित थे और इन्हें 'हंडुमान' कहते थे, जोकि उनकी भाषा में रामायण के महान पात्र हनुमान का नाम है. (म्यांमा से लेकर इंडोनेशिया और कंबोडिया तक रामकथा खूब प्रचलित है.)

निकोबार बहुत पुराने समय से **नक्कवरम्** (नंगों का देश) कहलाता था. यहां के मूल निवासी नंगे रहते थे, इसलिए यह नाम पड़ा होगा. 15 वीं सदी में पुर्तगाली यहां आये. उन्होंने इसे **नकुवार** कहा जो आगे चल कर **निकोबार** हो गया.

ब्रिटिश शासनकाल में सजायाफ्ता अपराधियों को यहां भेजा जाने लगा. 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले हजारों सिपाही और राजनीतिक बंदी यहां बेमौत मरने के लिए भेज दिये गये. इन द्वीपों को 'काला पानी' कहा जाता था और इनके नाम से ही लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते थे. यहां का पानी काला और खारा बताया जाता था. अनेक प्रसिद्ध स्वतंत्रता-सेनानी यहां की सेल्युलर जेल में लंबे अरसे तक बंद रहे.

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद 1 नवंबर 1956 को अंडमान-निकोबार को केंद्र-शासित प्रदेश का दर्जा दिया गया.

अंडमानी मछुआरे मछली पकड़ते हुए.

गोविंद की सूझ-बूझ

गोविंद ने मिठाई की दुकान खोली और खूब कमाया और कमा रहा है। रत्नमाला उसकी इकलौती बेटी है। उससे जो शादी करेगा, वही गोविंद की संपत्ति का एकमात्र वारिस होगा, इसलिए बहुत-से लोग उससे संबंध जोड़ने के लिए लगातार आते रहते हैं।

गोविंद भी किसी योग्य वर को ढूँढ़ने के काम में जी-जान से लगा हुआ है। शरत के बेटे के बारे में उसने पूछताछ की। पूरी जानकारी पाने के बाद उसने निर्णय किया कि अपनी बेटी की शादी उससे करूँ। उसने शरत से कहा ''महाशय, एक छोटी-सी विनती है। रिश्ता तय करने के पहले आपका बेटा मेरे घर दावत पर आये तो अच्छा होगा। आप यह मत समझिये कि आपके बेटे को दावत पर बुलाकर मैं आपका या आपके बेटे का अपमान कर रहा हूँ। मुझे ऐसा करने के लिए एक साधु ने आदेश दिया। उस साधु ने कहा कि युवक जब भोजन कर लेगा तब दूसरे ही क्षण तुम्हें यह निर्णय लेने की शक्ति दूँगा कि वह युवक तुम्हारी बेटी के योग्य है या नहीं। साधु ने यह भी कहा कि ऐसा करने पर शुभ ही शुभ होगा।''

गोविंद की बातों पर शरत आश्चर्य में पड़ गया, पर ऐसा करने से उसे कोई नुक़सान पहुँचनेवाला नहीं है'। इसलिए अपने बेटे को गोविंद के घर भोजन करने भेजा।

गोविंद ने उस युवक को दुपहर तक बातों में लगा रखा। तब जाकर रुचिकर भोजन-पदार्थ परोसे। भोजन हो जाते ही उसने उस युवक से कहा ''बेटे, मुझे लगता है कि मेरी बेटी से तुम्हारी शादी न हो तो अच्छा है। इसी में तुम्हारी और हमारी भी भलाई है। यही बात अपने पिताजी से बताना और कहना, वे मुझे क्षमा करें।''

शरत का बेटा निराश हुआ, पर कर क्या

सकता है। मौन वहाँ से चला गया।

इसके बाद तीन और लड़कों को गोविंद ने अपने यहाँ भोजन करने बुलाया और उन्हें भी अयोग्य ठहराकर भेज दिया। युवकों या उनके माता-पिताओं की समझ में आ नहीं रहा कि आख़िर किस प्रकार की योग्यता उनके पुत्रों में गोविंद देखना चाहता है। उन्हें लगा भी कि योग्यता परखने का यह भी कोई तरीक़ा हुआ? वे उससे झगड़ पड़ते, परंतु चुप रह गये, क्योंकि गोविंद ने उनके बेटों को दावत पर ले जाने की अनुमति पहले ही ले थी।

एक दिन गोविंद के निजी मित्र राधाकृष्ण उससे मिला। पूछा "क्या बात है, गोविंद। सुना कि दुल्हों को घर बुला रहे हो और रुचिकर भोजन खिला रहे हो। बात क्या है?"

गोविंद ने हँसते हुए कहा "साधु ने मुझसे क़सम खिलवायी कि जब तक योग्य दामाद न मिले, तब तक इस रहस्य को न खोलूँ। इसलिए थोड़े दिन और सब्र करो।"

राधाकृष्ण ने भी हँसते हुए कहा "ठीक है, ऐसा ही होने दो। परंतु हां, तुम जानते ही हो कि सीतापुर में मेरी बहन रहती है। कल ही मुझे लगा कि उसका तीसरा बेटा तुम्हारे दामाद बनने के योग्य है। उसे भोजन पर बुलाओगे या नहीं, तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।"

"दावत पर बुलाऊँगा। भोजन खिलाऊँगा। उसके बाद ही बाक़ी बातों के बारे में सोचूँगा।' कल ही हम दोनों मिलकर जाएँगे और वह लड़का अच्छा लगे तो उसे दावत पर बुलाएँगे।" गोविंद ने कहा।

राधाकृष्ण ने उसकी बात मान ली। दोनों मिलकर सीतापुर गये। रिश्ते के बारे में बातें कीं और उसे दावत पर आने आह्वान दिया। रमेश के माँ-बाप इस शर्त को सुनकर चकित रह गये। फिर भी उन्होंने अपने बेटे को जाने की अनुमति दी।

रमेश को लेकर जब वे गाँव पहुँचे तब गोविंद ने कहा "बेटे, आज रात को अपने मामा के यहाँ रहो। कल सबेरे ही मेरे घर आ जाना।" फिर उसने अपने दोस्त राधाकृष्ण से कहा "अपने भानजे के साथ तुम भी भोजन करने आ जाना।"

राधाकृष्ण दूसरे दिन सबेरे रमेश को साथ लेकर गोविंद के घर गया। दोनों को सामने के कमरे में बिठाया और उनसे बहुत देर तक बातें करने लगा गोविंद। राधाकृष्ण के पेट में

चूहे दौड़ने लगे। उसने गोविंद से पूछा "बड़ी भूख लगी है। क्या रसोई नहीं बनी ?"

गोविंद ने क्षमा माँगते हुए कहा "भोजन स्वादिष्ट होना चाहिये न, इसीलिए देरी तो होगी ही। इस बीच दोनों एक-एक गिलास दूध पीजियेगा"।

रमेश ने 'न' कहते हुए कहा "भोजन के पहले न ही कुछ खाने की अथवा न ही कुछ पीने की मेरी आदत है। मामाजी को चाहिये तो उन्हें दूध दीजियेगा"।

राधाकृष्ण ने भी भानजे का समर्थन किया और कहा "मुझे भी कुछ नहीं चाहिये"। आधे घंटे के बाद भोजन करने बुलावा आया। तीन तरह की मिठाइयाँ, तीन तरह के मिर्च भरे तीखे पकवान, पापड़ आदि तीन पत्तों में परोसे गये। गोविंद ने दोनों से बैठने को कहा और खुद एक पत्ते के सामने बैठ गया। राधाकृष्ण अपने दोस्त के बगल में बैठ गया।

किन्तु रमेश बिना बैठे बोला, "बहुत-से पदार्थ परोसे गये हैं। स्वादिष्ट तो होंगे ही, परंतु सब मुझसे खाये नहीं जाएँगे। अच्छा होगा, पहले ही कुछ निकाल दें।"

"ऐसी क्या बातें कर रहे हो ? पथ्थर भी खाकर पचा लेने की उम्र है तुम्हारी।" गोविद यों कहकर पदार्थ निकालने से इनकार कर रहा था।

परंतु रमेश ने मुस्कुराकर कहा "मित आहार खाने की मेरी आदत है। ऐसा खाने से जीर्ण शक्ति अधिक काल तक हमारी रक्षा करती रहती है। यह विषय तो आप भी जानते ही होंगे।"

गोविंद के कहने पर बेटी रत्नमाला आयी

और रमेश के पत्ते से कुछ पदार्थ निकालकर ले गयी। पत्ते में जो परोसे गये थे, रमेश ने खा लिया। दोनों के पहले ही उसने अपना खाना ख़तम कर लिया।

भोजन की समाप्ति के बाद गोविंद ने रमेश और राधाकृष्ण की ओर पान की डिबिया बढ़ायी और रमेश से कहा "लगता है, पकवान अच्छे नहीं लगे।"

रमेश उत्तर देने के लिए खिसिया रहा था। आख़िर मजबूरन उसे कहना ही पड़ा कि तीन-चार पदार्थ रुचिकर नहीं हैं। उसने साथ ही सलाह भी दी कि क्या-क्या चीज़ें मिलाने से वे स्वादिष्ट बन सकते हैं।

उसकी बातों से बहुत ही खुश होते हुए गोविंद ने कहा "राधाकृष्ण, साधु मेरे कान में बता रहा है कि यही लड़का मेरी बेटी के

लिए योग्य वर है।''

राधाकृष्ण ने ज़्यादा खाना खाने की वजह से हाँफते हुए कहा ''मैंने जान लिया कि साधु का नाम लेकर तुम्हीं कुछ सोचने लगे। कहो, क्या सोच रहे थे ?''

गोविंद ने हँसते हुए कहा ''राधाकृष्ण, तुम तो जानते ही हो कि मैं मिठाइयों का व्यापार करता हूँ। उनके बीच बैठकर व्यापार करनेवाले को प्रधानतया चाहिये-खाने की अच्छी आदतें। वे तुम्हारे भानजे में है। ऐसा लड़का मेरा व्यापार अपने हाथ में ले लें तो स्वादिष्ट पकवान बनवायेगा और अधिकाधिक लाभ कमायेगा। कोई और हो तो दुकान में बैठकर जब-जब चाहा, हाथ को जो पदार्थ लगा, लेकर खाता रहा तो अपनी भी तबीयत ख़राब कर लेगा और साथ ही व्यापार में घाटा भी हो जायेगा। जो लड़के मुझे अच्छे लगे, उनकी यों मैंने इसी बात की परीक्षा ली। भगवान की कृपा से रमेश जैसा अच्छा दामाद मिल गया। अब बेटी को तथा व्यापार को उसे सौंप दूँगा और निश्चिंत होकर जीवन बिताऊँगा।''

चकित होते हुए राधाकृष्ण ने मित्र की बातें सुनीं और कहने लगा ''क्या तुम समझते हो कि दामाद का चुनाव तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है ? अपनी बेटी की कोई क्या अपनी इच्छा नहीं है ? उसकी इच्छा भी तो जाननी चाहिये।''

गोविंद ने कहा ''जब आप दोनों ने खा लिया और सामने के कमरे में बैठ गये तब मैं अंदर गया, रत्नमाला की पसंद के बारे में जानने के लिए ही। मेरी बेटी को यह रिश्ता बहुत पसंद आया। इसे पसंद है या नहीं, निर्णय तुम्हारे भानजे को ही बताना होगा।''

राधाकृष्ण ने अपने भानजे से पूछा, ''तुम्हारा क्या निर्णय है''। रमेश ने संकोच किये बिना कह दिया ''कुछ भी हो, गोविंद बहुत ही समझदार व्यक्ति हैं। दामाद को चुनने की उनकी यह पद्धति मुझे बड़ी ही अच्छी लगी। भला गोविंद के निर्णय को कैसे न कहूँ।''

''वाह रे वाह। होनेवाले दामाद से अपनी प्रशंसा करवा ली। तुम्हारी होशियारी की कितनी ही प्रशंसा करूँ, कम है गोविंद।'' हंसते हुए कहकर राधाकृष्ण ने गोविंद को बधाई दी।

वे अंग्रेजों से जूझे - 4

पालयक्कारों का विद्रोह

वर्णन : मीरा उगरा ◆ चित्र : गौतम सेन

जब अक्टूबर 1798 में पांजालंकुरिचि के पालयक्कार वीर पांड्य कट्टबोम्मन् को फांसी दे दी गयी, कंपनी के अफसरों ने राहत की सांस ली.

वीर पांड्य के दो भाई और पंद्रह अन्य रिश्तेदार पालयंकोट्टै के किले में कैद थे. गांववाले वहां पहुंचे...

...फेरीवालों के भेस में...

ईंधन के गट्ठरों में हथियार छिपे हुए थे. सूर्यास्त होते ही –

एकाएक धावा करके पहरेदारों को काबू में कर लिया गया और कैदी फुरती से किले से निकल गये.

सेवतैया को पांजालंकुरिचि का नया पालयक्कार घोषित कर दिया गया. प्रजा उसके झंडे तले आ जुटी.
हम फिर से हथियार गढ़ेंगे.
और किला फिर से खड़ा करेंगे.

शीघ्र ही शिवगंगा का मुरुडु पांड्यन्, डिंडिगल का गोपाल नायक, मालक्कार का केरल वर्मा और दूसरे बहुत से सरदार उनके संग हो गये.
हमारे मित्र मुरुडु पांड्यन् ने 30,000 सैनिक भेजे हैं.

हमारे मित्र प्रवरों ने किला फिर से बनाने के लिए सामान भेजा है और तोपें व बारूद भी.

सेवतैया की फतहों से चिंतित हो कर कॉलिन मैकॉले ने तिरुनेल्वेली से कूच किया और पांजालंकुरिचि पर धावा बोला.
क्या... हमारे तोड़े हुए किले की जगह एकदम नया किला बन गया है !
उम्मदुरै के सैनिक बहादुरी से लड़े और मैकॉले को उलटे पांव लौटना पड़ा.

मगर 31 मार्च 1801 को फिर धावा बोला गया. इस बार भी मैकॉले को पीछे हटना पड़ा.

...और मुरुदु पांड्यन् तथा दूसरे साथियों से जा मिले. रामनाथपुरम्, तिरुप्पत्तूर तथा दूसरे कई किले उनके हाथ में आ गये. जुलाई में उम्मीदुरै ने मदुरै जीत लिया...

...और छापामार लड़ाई में अंग्रेजों को परेशान करना जारी रखा.

इस बीच अंग्रेज अपनी फौजों को मजबूत बना रहे थे...

वाह ! स्वागत है, राजा तोंडेमान ! आपकी मदद के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !

तंजाऊर के राजा साहब भी फौजें और साजोसामान भेज रहे हैं, सर.

पालयक्कार बड़ी बहादुरी से लड़े, पर उन्हें मुंह की खानी पड़ी... सो भी कई जगह.

मुरुदु पांड्यन्, उसका भाई वेल्ल पांड्यन्, उनके बेटे व पोते गिरफ्तार करके फांसी पर चढ़ा दिये गये. उसी तरह गोपाल नायक और दूसरे विद्रोही पालयक्कार भी. 16 नवंबर 1801 को पांजालंकुरिचि में सेवतैया और उम्मीदुरै का सिर धड़ से अलग कर दिया गया.

उत्तर ने अपने पिता विराट सें कहा था कि किसी भगवान ने युद्ध जीतने में उसकी सहायता की, जिस कारण वह गायों को कौरवों से छुड़ा पाया। विराट ने तब कहा "पता नहीं कि किस भगवान के महोपकार के कारण यह संभव हो पाया। मैं उनके दर्शन का अभिलाषी हूँ। मैं उनकी पूजा करके अपने को धन्य करना चाहता हूँ। उस भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वे मेरी यह इच्छा पूरी करें"।

उत्तर ने कहा "देवकुमार कहीं अंतर्धान हो गये। कल अथवा परसों हमें अपना दर्शन देंगे।" विराट राजा को यह मालूम नहीं था कि वह देवकुमार नपुंसक के रूप में वहीं उपस्थित है।

विराट की अनुमति पाने के बाद अर्जुन ने कुरुवीरों की पगड़ियाँ उत्तरा को दे दीं।

इस घटना के तीन दिनों के बाद पाँचों पांडवों ने प्रात:काल अपने दैनिक कार्यक्रमों की पूर्ति की, अच्छी तरह से नहा-धोया, श्वेत वस्त्र पहने और विराट के दरबार में प्रवेश किया। पाँचों आसनों पर बैठे, जिनपर राजा बैठा करते हैं।

थोड़ी देर बाद राजा विराट सभास्थल पर आया। उन्नत आसनों पर आसीन पांडवों को देखकर क्षण भर के लिए वह अवाक् रह गया। क्रोधित होते हुइ ऊँचे स्वर में उसने धर्मराज से पूछा "मैंने तुम्हें अपने यहाँ नियुक्त किया, चौपड़ खेलने के लिए। तुम क्यों सिंहासन पर आसीन हुए ?"

अर्जुन ने विराट के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा "राजन्, ये महात्मा इंद्र के आधे आसन पर आसीन होने के भी योग्य हैं। भला यह तो साधारण गद्दी है। ये धर्मस्वरूपी हैं; अद्भुत बलशाली हैं; राजर्षि हैं; मनु की तरह लोक की रक्षा करने की योग्यता रखते

हैं। जब ये कुरुदेश के शासक थे, तब इनके पास दस हज़ार गज और तीस हज़ार रथ थे। स्वयं दुर्योधन इस महान योद्धा के बल को देखते हुए चिंतित हो उठता था। आपका यह कहना क्या समुचित है कि ऐसे ये व्यक्ति सिंहासन पर आसीन होने की योग्यता नहीं रखते ?''

अर्जुन की इन बातों को सुनकर विराट आश्चर्य में पड़ गया और कहा ''ये कुंती देवी के प्रथम पुत्र धर्मराज हैं ? तो फिर इनके भ्राता भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव कहाँ हैं ? द्रौपदी कहाँ है ? उनके बारे में कोई जानकारी ही नहीं है ? अगर हैं तो कहाँ हैं ?''

अर्जुन ने सविवरण बताया ''वल्लभ के नाम से आपके यहाँ जो काम कर रहे हैं, वे ही भीम हैं। उन्होंने ही गंधर्वों पर विजय पायी और द्रौपदी के लिए सौगंधिक पुष्प ले आये। वे ही कीचक का वध करने वाले गंधर्व हैं। क्या यह गुरुतर कार्य और किसी से संभव हो सकता है ? आपके घोड़ों की देखभाल करनेवाला कोई और नहीं, नकुल ही है। गो गणों का पालन-पोषण करनेवाला गोपालक सहदेव है। ये दोनों महाशूर हैं। आपकी दासी सैरंध्री ही द्रौपदी है। मैं अर्जुन हूँ। आपकी छाया में हमारा अज्ञातवास सुखपूर्वक गुज़रा।''

पांडवों का जब रहस्य खुल गया, जब वे अपने निजी रूप में प्रकट हो गये तब उत्तर ने अर्जुन के पराक्रम का वर्णन किया। उसने सविस्तार बताया कि अर्जुन ने कैसे पांडवों को युद्धक्षेत्र से भगाया और विजय पायी। उसने अर्जुन की शूरता की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा ''सिंह जिस प्रकार हिरणों का पीछा करके उन्हें मार डालते हैं, उसी तरह अर्जुन ने कौरव योद्धाओं का पीछा किया और उन्हें मार भगाया। मैंने अपनी इन आँखों देखा कि इस शूर ने अपने एक ही बाण से मस्त हाथी को मार डाला। जब इन्होंने शंख फूंका तब शत्रुओं के कानों के साथ-साथ मेरे भी कानों में ताले पड़ गये।''

यह सुनकर विराट ने अपने पुत्र से दबे स्वर में कहा ''तुमने सच कहा। हमें अब पांडवों से मित्रता निभानी है। इसलिए बेटी उत्तरा का विवाह अर्जुन से करेंगे''।

उत्तर ने कहा ''यह हम करें, इसके पहले हमें चाहिये कि हम पांडवों का सम्मान बड़े ही वैभव के साथ करें।''

विराट ने कहा ''हाँ, तुमने ठीक कहा।

जब मैं युद्ध में पराजित हुआ और सुशर्मा के हाथों बंदी हुआ, तब भीम ने मुझे छुड़ाया और हमारे लिए विजय प्राप्त की। पांडवों की सहायता के कारण ही हम विजयी हुए। हमें चाहिये कि धर्मराज को हम अपना बंधु बनावें, अपना बना लें। हमने अनजाने में कुछ का कुछ कह दिया। धर्मराज से क्षमा-भिक्षा माँगनी है ''।

यों कहकर विराट ने धर्मराज को अपना राज्य, कोषागार तथा राजधानी सहित सब कुछ समर्पित किया और पांडवों से बारंबार गले मिलता रहा।

बाद उसने धर्मराज से कहा ''आपने वनवास बिताया, अतिकष्टदायक अज्ञातवास भी सफलतापूर्वक बिताया। मेरा राज्य अर्जुन के अधीन रहे। मैं अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह इनसे कराउँगा।''

धर्मराज ने अर्जुन की ओर देखा। अर्जुन ने विराट से कहा ''राजन्, मैं आपकी पुत्री को अपनी बहू बनाऊँगा। हम दोनों वंशों के बीच संबंध सुस्थिर रूप से स्थापित हों, हम दोनों के लिए यही अच्छा है, इसी में हम दोनों वंशों की भलाई है''।

यह सुनते ही विराट ने असीम आश्चर्य प्रकट करते हु पूछा-''मेरी पुत्री को पत्नी के रूप में स्वीकर करने में आपको क्या आपत्ति है ?''

''राजन्, मैं आपकी पुत्री को बहुत समय से देखता आ रहा हूँ। वह मुझे अपने पिता समान मानती है। अलावा इसके, मैं उसका नाट्याचार्य हूँ। मेरा पुत्र अभिमन्यु श्रीकृष्ण का भानजा है। यद्यपि वह किशोर है, परंतु साहसी है, वीर है, अस्त्र चलाने में अति प्रवीण है। आपकी पुत्री के योग्य वर है'' अर्जुन ने कहा।

विराट अर्जुन की बातों से संतृप्त हुआ

और कहा "ठीक है, आपकी इच्छा के अनुसार ही करूँगा। मेरे साथ जो रिश्ता जोड़ा जा रहा है, वह शुभदायक व फलप्रद हो"।

धर्मराज ने निर्णय किया कि विवाह किस मुहूर्त पर संपन्न हो। विराट और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को तत्संबंधी समाचार भिजवाया।

अज्ञातवास की पूर्ति होते ही पांडवों ने विराटनगर छोड़ दिया और मर्त्स्य देश के ही उपघ्लाव्य नामक स्थल पर जाकर बस गये। पांडवों के हितैषी अपनी सेनाओं सहित वहाँ आये। द्रुपद और द्रौपदी के पुत्र उपपांडव, शिखंडी, धृष्टद्युम्न एक अक्षोहिणी सेना के साथ वहाँ आये। विराट ने द्रुपद राजा का स्वागत किया, उनकी पूजा की, आदर सहित अपने यहां ले गया। यों और अनेकों राजा उपप्लाव्य पहुँचे।

द्वारका से अभिमन्यु, इंद्रसेन आदि को अपने साथ लेकर आये श्रीकृष्ण, बलराम। उनके साथ-साथ कृतवर्मा, युयुधान, सात्यकी, अक्रूर, सांब आदि भी अपने-अपने रथों में आये।

विराट के गृह में शंख फूंके गये, भेरियाँ बजायी गयीं। आगतों का उच्च स्तर पर स्वागत हुआ। विराट ने वहाँ पांडवों की पूजा की। गन्ने का मधुर रस उन्हें पिलाया गया। सुदेष्णा और उसके अंत:पुर की स्त्रीयों ने उत्तरा को दुल्हन के रूप में सुसज्जित किया, उसका अलंकार किया।

अर्जुन और धर्मराज ने जब उत्तरा को सहर्ष अपनी बहू के रूप में स्वीकार करने का निश्चय किया, तब श्रीकृष्ण की उपस्थिति में यह विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ। अभिमन्यु और उत्तरा पति-पत्नी के बंधन में बंध गये।

विवाह के दूसरे ही दिन अभिमन्यु तथा पांडवों के अतिथि विराट के दरबार में समाविष्ट हुए, सभा में विराट, द्रुपद तथा कुछ वृद्ध राजा भी उपस्थित थे। सभा में वसुदेव, सात्यकी, बलराम, कृष्ण, प्रद्युम्न, सांब, अभिमन्यु, उपपांडव, पांडव और विराट के पुत्र भी थे।

थोड़ी देर तक वे परस्पर बातें करते रहे। कृष्ण ने सभी को संबोधित करते हुए कहा।

"आप सब जानते हैं कि शकुनि के द्वारा खेले गये मायावी जुए में हमारा धर्मराज हार गया। उसके राज्य का अपहरण करने के उद्देश्य से ही यह चाल दुर्योधन ने चली। अपने बल-पराक्रमों से हमारे पांडव राज्य पा

सकते थे। परंतु वचनबद्ध होकर इन्होंने कठोर वनवास किया। उससे भी कठिनतम, घोर अज्ञातवास सफलतापूर्वक पूर्ण किया। एक पूरे वर्ष तक ये दास बने रहे। अब हमें आगे क्या करना है, आप ही को निर्णय लेना होगा। यह निर्णय धर्मराज को और दुर्योधन को भी सही व न्यायोचित लगे। यह धर्मसम्मत भी हो। यह धर्मराज स्वर्गाधिपति भी दें, अधर्म हो तो स्वीकार नहीं करेगा। धर्म के अनुसार छोटा-सा गाँव भी इसे दिया जाए, सहर्ष स्वीकार करेगा। वह सदा धृतराष्ट्र के पुत्रों की भलाई चाहनेवालों में से हैं। अब पांडव वहीं राज्य मांग रहे हैं, जिसे उन्होंने अपनी स्वशक्ति से जीता। दोनों पक्षों के लोग भाई-भाई के पुत्र ही हैं, अतः ऐसा मार्ग ढूंढिये, जिससे उभय पक्षों का कल्याण हो। दुर्योधन न्यायपूर्वक पांडवों का राज्य पांडवों को सौंप दे तो कोई समस्या नहीं होगी। अगर ऐसा नहीं हुआ, इनके साथ अन्याय करने पर दुर्योधन तुल जाए तो पांडव धृतराष्ट्र के पुत्रों को मार डालने से कदापि नहीं झिझकेंगे। उनका विध्वंस करके ही छोड़ेंगे। आप लोग यह मत समझिये कि दुर्योधन बलवान है और पांडव बलहीन। हम जान नहीं पाये कि दुर्योधन के क्या विचार हैं। यह जाने बिना किसी निर्णय पर पहुँचना मूर्खता ही होगी। अतः दुर्योधन का अभिप्राय जानने के लिए यहाँ से किसी दूत को भेजना होगा। यह आवश्यक है कि वह दूत कुलीन, जागरूक तथा कुशल व्यक्ति हो। उस दूत का काम होगा-दुर्योधन से वह मिले, उसे समझाये और पांडवों को उनका आधा राज्य दिलाये। मेरी आशा है कि वह इस कार्य में सफल होगा''।

उपरांत बलराम ने कृष्ण के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा ''यहाँ से जानेवाला

दूत भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोण, अश्वत्थामा, कृप, कर्ण आदि कौरव प्रमुखों से मिलेगा । उनसे अच्छी तरह से बातें करेगा । उन्हें भली-भांति समझायेगा । किसी का पक्ष नहीं लेगा । अपना कोई स्वार्थ नहीं देखेगा । मैं मानता हूँ कि धर्मराज ने शकुनि से जुआ खेलकर ग़लती की । शकुनि पासे फेंकने में प्रवीण है । धर्मराज किसी और से खेलता तो अवश्य जीत जीता । आवेश में आकर उसने सब कुछ दाँव पर रख दिया । मैं समझता हूँ कि शकुनि ने कोई धोखा नहीं दिया । इसलिए यहाँ से जो दूत जायेगा, उसे दुर्योधन का अनुग्रह पाना आवश्यक है''।

बलराम की इस बातों को सुनकर सात्यकी आपे से बाहर हो गया । वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और बलराम की निंदा करते हुए कहने लगा ''तुमने अपनी अंतरात्मा की बातें कह दीं, इसलिए मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ । तुम्हारी अर्थहीन इन बातों को सुनकर भी कोई कुछ कह नहीं रहा है, इसलिए तुमसे नहीं, इन सबसे मैं बहुत नाराज़ हूँ । जबरदस्ती करके धर्मराज को जुआ खेलने पर बाध्य किया, ऐसी जीत न्यायपूर्ण कैसे कहलायी जा सकती है ? वे स्वयं धर्मराज के घर आते और जुए में जीतते तो न्यायपूर्ण कहा जा सकता है । जो भी हो, पांडवों ने वचनबद्ध होकर वनवास किया, अज्ञातवास किया । धर्म के पथ पर ही वे चले । अपना धर्म निभाकर उन्होंने साबित किया कि वे चरित्रवान हैं, नीतिवान हैं, सच्चे हैं । इस स्थिति में धर्मराज अगर अपना राज्य माँगे तो इसमें अधर्म कहाँ ? अपने ही राज्य के लिए वे भिक्षा क्यों माँगे ? मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि दुर्योधन का मन कलुषित है, उसके विचार बुरे हैं । वह किसी भी स्थिति में इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा । पांडवों का राज्य उन्हें वापस नहीं देगा, वह धर्म के मार्ग पर चलने प्रस्तुत नहीं होगा । वही नहीं, उसके अनुयायी भी अनीति के मार्ग पर चलने के लिए ही उसे प्रोत्साहन देंगे । अगर कोई कहे कि दुर्योधन धर्म-मार्ग पर चलेगा तो मैं इसे सरासर झूठ और भ्रम कहूँगा । हम सब उनका नाश करेंगे और धर्मराज का राज्याभिषेक करेंगे । धृतराष्ट्र, धर्मराज पर दया खाकर उसका राज्य उसे देने तैयार हो जाये तो हमें उस दया की भीख नहीं चाहिये । धर्मराज का अभिप्राय जाने बिना आप

आगे का कोई काम न करें"।

द्रुपद ने कहा "सात्यकी ने जो भी कहा, सही कहा। सच तो यही है कि अच्छी और सच्ची बातों से पिघलकर, अपना मन बदलकर दुर्योधन राज्य नहीं लोटायेगा। धृतराष्ट्र के पुत्र उसके वश में नहीं हैं। वे उनकी बातों की परवाह नहीं करेंगे। भीष्म और द्रोण इस दुस्थिति में हैं कि उन्हें दुर्योधन का समर्थन करना ही पड़ेगा; उसके हाँ में हाँ मिलाना ही होगा। कर्ण व शकुनि उसकी सेवा करते हुए अपने को धन्य समझ रहे हैं। वे मूर्ख हैं। जिस दूत को हम भेजनेवाले हैं, उसका अच्छा होना मात्र पर्याप्त नहीं है। मीठी-मीठी बातें करने मात्र से कोई बात नहीं बनेगी, कोई उपयोग नहीं होगा। मेरा स्पष्ट विचार है कि दूत की ऐसी बातों से दुर्योधन की दृष्टि में पांडव अशक्त व पंगु लगेंगे। हमें अपनी तरफ से जो-जो प्रयत्न करने हैं, करना चाहिये। हमें चाहिये कि शल्य, धृष्टकेतु, जयत्सेन, कैकेय आदि को अपनी सेना-सहित आने के लिए ख़बर भेजें। अन्य हमारे सहयोगी राजाओं को भी अपनी सेना सहित आने के लिए न्योता भेजें। दुर्योधन भी यही काम करेगा। जो पहले पूछेगा, उस की सहायता की जायेगी, इसलिए सेनाओं को सन्नद्ध करने के कार्य में हम जुट जाएँ। यह मेरा पुरोहित है। वृद्ध है, अनुभवी है, धर्मशील है, नीतिवान है। वहाँ इसे कहना है, कहिये और धृतराष्ट्र की सभा में भेजिये।"

अंत में कृष्ण ने कहा "द्रुपद के कहे अनुसार किया जाए तो पांडवों की भलाई होगी। दोनों पक्ष के लोग सुखपूर्वक रहें, मैत्री के साथ रहें तो इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिये? हम सब अपनी-अपनी जगह लौटकर चले जाएँ, अच्छाई इसी में है। द्रुपद वृद्ध हैं। हम सबके गुरु समान हैं। धृतराष्ट्र को कौन-सा संदेश भेजा जाए, वे ही सुझाएँ तो अच्छा होगा। भीम, द्रोण आदि अवश्य ही उस संदेश का समर्थन करेंगे। दुर्योधन ने अगर इस संदेश को अस्वीकार कर दिया, इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया तो अन्य राजाओं को जो ख़बर भेजी जायेगी, मुझे भी भेजियेगा।"

यह कहकर जब श्रीकृष्ण लौट रहा था, तब विराट ने उसे अनमोल भेंटे दीं और सादर बिदा किया।

'चन्दामामा' की ख़बरें

बिलक्षण शगल

साधारणतया देखा गया है कि बच्चे विदेशी स्टाम्प्स, तरह-तरह के सिक्के, अजीबोगरीब पोस्ट कार्डों की तस्वीरें, रंगबिरंगे चाकलेटों के कवर इकट्ठे करते रहते

हैं। यह उनका शगल है। किन्तु केरल राज्य के निलंबूर के षमीर और वहीर नामक दो भाइयों के शगल बहुत ही विलक्षण है। निलंबूर के घने जंगलों में अधिकाधिक हाथी होते हैं। दोनों भाई जब एक बार जंगल के आसपास घूम रहे थे तब उन्होंने वहाँ दो सालों के पहले लगभग दो फुटों की लंबाई का पक्षी का एक पंख देखा। उसे वे घर ले आये और सुरक्षित रखा। उस समय से वे तरह-तरह के पंखों को इकट्ठा करते आये। यह उनका रुचिकर्म बन गया। मोर, तोते, मैना, जैसे लगभग दो सौ प्रकार के पक्षियों के पखों का उन भाइयों ने संग्रह किया। माता-पिता व अध्यापकों ने उन्हीं काफी प्रोत्साहन दिया। उन्होंने पक्षियों के बारे में भाइयों को बहुत-सी नयी-नयी बातें भी बतायीं। तरह-तरह के पक्षियों, उनकी आहार-पद्धतियों तथा उनकी जीवन-शैली के बारे में दोनों भाइयों ने नोट्स भी तैयार किये। पंखों की संख्या से उनके लिए अब प्राधान्य हो गया - उनका वैविध्य। इसीलिए वे अब विचित्र पक्षियों के पंखों को ही जमा करने में अधिक दिलचस्पी दिखा रहे हैं और इन्हीं प्रयत्नों में लगे हुए हैं।

सोने का शौक़

४,९३,००० करोड़ों रुपयों का ९,५०० टनों का सोना हमारे देश में है। इतना सारा सोना आभूषणों के रूप में हमारे देश के संपन्न परिवारों के पास है। संसार में उपलब्ध सोने में से आठ प्रतिशित सोना हमारे देश में है। अंदाज़ा है कि हर साल पाँच सौ टनों का सोना हमारे देश के परिवार उपयोग में ला रहे हैं। परंतु इसमें से दो टनों का सोना मात्र हमारे देश की खानों से हमें उपलब्ध होता है। शेष सारा सोना विदेशों से ही आयात होता है।

नीलाम में अस्थिपंजर

अमेरीका के दक्षिण डकोटा में १९९० में हिड्रिकसन नामक एक शास्त्रज्ञ ने लगभग ६५,०००,००० वर्ष पहले के एक डैनोजार के अस्थिपंजर को ढूँढ निकाला। पचास फुट की लंबाईवाले इस अस्थिपंजर का नाम है सूयी। यह अस्थिपंजर १३० पेटियों में हाल ही में न्यूयार्क ले आया गया। अब तक डैनोज़ारों के जितने भी अस्थिपंजर मिले, उनमें से चालीस से लेकर पचास प्रतिशत तक के अस्थिपंजरों की हड्डियाँ शिथिल पायी गयीं। किन्तु सूयी अस्थिपंजर की सब हड्डियाँ एकदम सुरक्षित हैं। उनमें कोई शिथिलता दिखाई नहीं पडी। हाल ही में न्यूयार्क में इस अस्थिपंजर का नीलाम हुआ। चिकागो म्यूज़ियम के एक मालिक ने ८,४००,००० डालर (लगभग तीस करोड़ रुपये) चुकाकर इसे खरीद लिया।

हमारे देश की शोभाएँ

हरी भरी भूमि व पर्वतों से भरे दक्षिण भारत के केरल राज्य के कोचिन नगर का अपना प्राचीन इतिहास है। ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक वैविध्य के लिए यह नगर प्रख्यात है। अनेकों शताब्दियों से यहाँ के बंदरगाह से चाय की पत्तियाँ, काफी के बीज, सुगंधद्रव्य आदि निर्यात किये जा रहे हैं। सोलहवीं शताब्दी में पहले पहल पुर्तगालियों ने इसे अपने अधीन किया। बाद यह डचवालों के वश में आ गया। बंदरगाह के समीप मट्टानचेरी के पास 'डचपालेस' है, जिसका निर्माण सचमुच पुर्तगालियों ने ही १५५७ में किया। चूंकि इसका पुनरुद्धार १६६३ में डचवालों ने किया, इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

कामनवेल्थ के देशों में से अतिप्राचीन यहूदियों का प्रार्थना मंदिर सिनागोग यहीं है। यह प्रार्थना मंदिर १५६८ में निर्मित हुआ। परंतु ई.स. पहली शताब्दी में ही रोमनों के अत्याचारों से पीड़ित यहूदी शरणार्थी बनकर केरल प्रांत में आये। केवल कोचिन में ही चीनवालों की मछलियाँ पकड़नेवाली नावें अब भी उपयोग में लायी जा रही हैं।

कोचिन के चारों ओर बहुत-से द्वीप हैं। इन द्वीपों में पहुँचने के लिए नौकाएँ उपलब्ध हैं। वेल्लिंगटन द्वीप के समीप डाल्फिन्स उठते-गिरते रहते हैं। आह्लादमयी वातावरण में वैपीन द्वीप में घूमने-फिरने से मन को बड़ी शांति मिलती है। कोचिन नगर में रेल्वे स्टेशन व हवाई अड्डा भी हैं। इस नगर में पहुँचने के लिए आलप्पी से नाव में यात्रा करें तो आप अपने को नारियलों के पेड़ों से घिरा पायेंगे। यह यात्रा आपके मन-तन को प्रफुल्लित करेगी।

पुराणकाल के राजा :

एकवीरा

बहुत पहले पवित्र गंगा नदी के तट पर छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। उनमें से एक राज्य के युवराज थे एकवीरा। वे हेहाय वंश के थे।

एक दिन वे वनविहार कर रहे थे। उस समय दक्षिण दिशा से अद्भुत सुगंधि आ रही थी। वे यह ढूँढने निकल पड़े कि कहाँ से यह सुगंधि चली आ रही है। उन्होंने देखा कि एक सुंदर सरोबर के मध्य बड़ा ही मनमोहक शतपत्रवाला विकसित कमल है। उन्होंने यह भी देखा कि उस सरोवर के तट पर एक सुंदर युवती बैठी विलाप कर रही है। युवराज उसके पास गये और उससे विलाप का कारण पूछा।

वह पड़ोस के राजा रैभ्य राजा की राजकुमारी एकावली की सहेली है। राजकुमारी एकावली को कमल पुष्पों से बड़ा ही प्यार है। उसके लिए राजा ने कितने ही कमलों के तटाकों का प्रबंध किया। एकावली इस सरोवर के दिव्य कुसुम की सुगंधि से बहुत ही प्रभावित हुई। अपनी सहेली के साथ इसीलिए वे वहाँ आयीं। कालकेत नामक राक्षस ने उसे देखा और उसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर उससे विवाह करने का प्रस्ताव रखा। राजकुमारी ने उसके प्रस्ताव को ठुकराया तो उस राक्षस ने उसे क़ैद करके पाताललोक की गुफ़ा में डाल दिया। इसी कारण उसकी सहेली विलाप कर रही है।

एकवीरा पाताललोक गये और उस राक्षस को मारकर युवरानी को अपने साथ ले आये। फिर राजा रैभ्य को उसकी पुत्री सौंप दी।

रैभ्य राजा एकवीरा के इस साहस पर बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा ''युवराज, मैं पहले ही निर्णय ले चुका कि मेरी पुत्री का विवाह तुमसे हो। यह विषय बताने के लिए मैं अपने मंत्रियों को तुम्हारे पास भेजना चाहता था। तुमने स्वयं उसकी रक्षा की और मुझे सौंपा, इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम उससे विवाह रचाओ।''

एकवीरा बहुत खुश हुए और एकावली से विवाह रचाया।

क्या तुम जानते हो?

प्रभुता-चिह्न

मध्ययुग में राजपरिवारों के योद्धा अपने-अपने ढालों पर सुँदर चिन्हों को अंकित करते थे। उन्हें 'हेराल्डिक डिजैन्स' कहते हैं। इसके बारे में अध्ययन करनेवाले विभाग को 'हेराल्ड्री' कहते हैं। इनका अंकन केवल अलंकार मात्र के लिए ही होता नहीं था। लगभग ई.स. ११४० से योद्धा इनका उपयोग करने लगे। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी वंशानुसार इसे धारण करती रही। कुछ योद्धा ढालों पर ही नहीं बल्कि शिरस्त्राणों, कवचों तथा घोड़ों की लगामों पर इन चिन्हों का अंकन करते थे। उन दिनों में योद्धाओं के लिए निर्णीत पहनावे नहीं थे। इसलिए प्रभुता के ये चिन्ह युद्ध करते समय यह जानने के लिए उपयोग में आते थे कि कौन मित्र है और कौन शत्रु।

इंद्रधनुष

कार्ल लूयिस

खिलाड़ियों के बड़े परिवार का अद्भुत खिलाड़ी है - कार्ल लूयिस। उसका पिता व्यायाम का अध्यापक था। माँ और बहन अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं। उसका भाई 'सोकर' का खिलाड़ी है। क्रीड़ा-क्षेत्र में कार्ल का जीवन बहुत ही सफल कहा जा सका है। १९८३ में युनैटेड स्टेट्स चांपियनशिप में तीन बार इसने जीत पायी। १९८४ में इसने ओलंपिक्स में भाग लिया और जैस्सी ओवेन्स के समान रिकार्ड स्थापित किया। १९८८ में सियोल में संपन्न ओलंपिक्स में १०० मीटर, २०० मीटरों की दौड़ की प्रतियोगिता में, लांगजंप में ४, +१०० मीटरों के रिलों में चार सुवर्ण पदक जीते। यों जेस्सी ओवन्स के समान रिकार्ड स्थापित किये। १९८८ में सियोल में हुए ओलंपिक्स में सौ मीटरों की दौड़ की होड़ और लांगजंप में जीतकर सुवर्ण पदकों को क़ायम रखा। लांग जंप में उसने अधिक विजयें ही प्राप्त नहीं की बल्कि थोड़ी-सी दूरी को अत्यधिक तेजी से कूदनेवाले 'स्प्रिंटर' के नाम से भी विख्यात हुआ। हाल ही में क्रीड़ा-क्षेत्र से इसने अवकाश ग्रहण किया।

स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती के अवसर पर 'चन्दामामा' की भेंट

प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम - ४
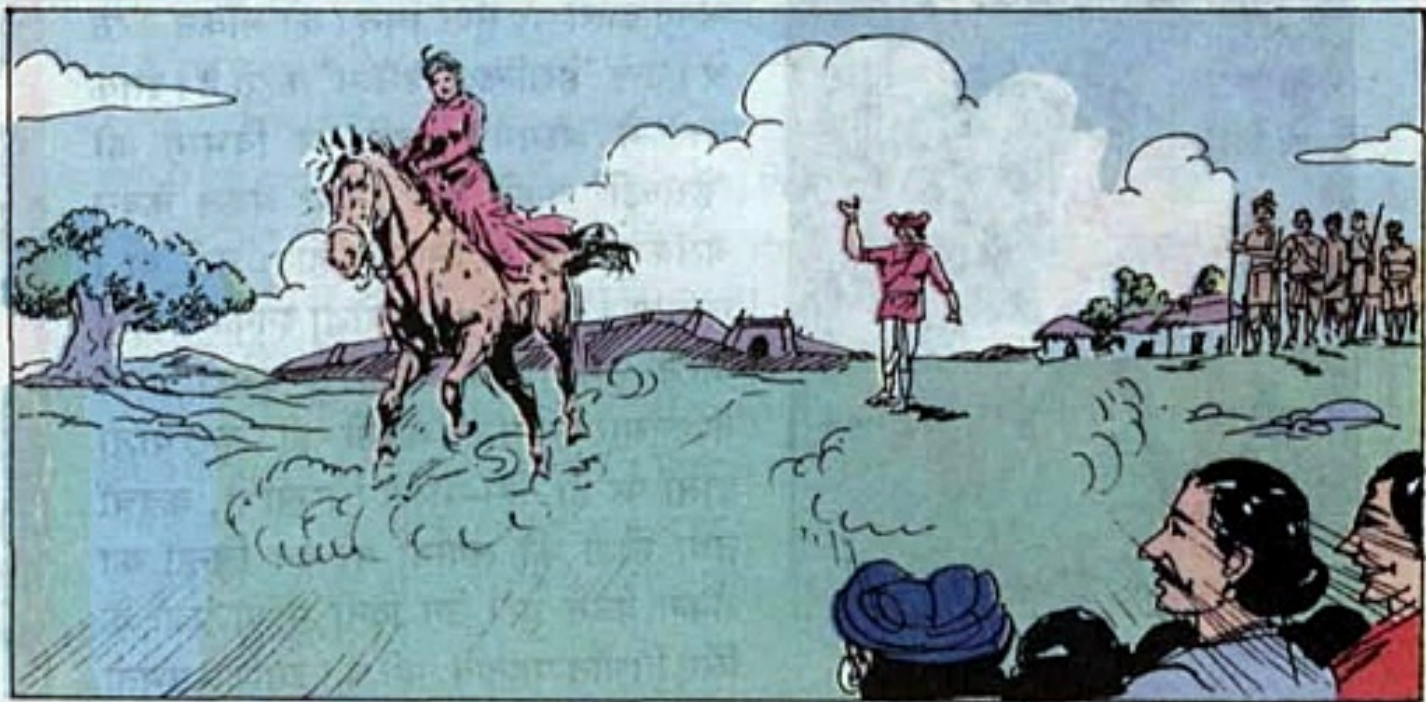
(भारतीय जनता महसूस करने लगी कि व्यापार करने बहुत ही दूरी से आये अंग्रेज़ों को यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि हम क्या करें और क्या नहीं करें। एक तो उन्होंने भारत के कितने ही राज्यों को अपने अधीन कर लिया और तिसपर भारत भर में जनता को छोटी-सी छोटी बात पर भी अंधाधुंध कुचल रहे हैं। जनता भड़क उठी। अंग्रेज़ों के विरुद्ध मेरठ में विद्रोह हुआ और विजय भी पायी। फिर दिल्ली जाकर अंग्रेज़ों की छावनियों पर धावा बोल दिया। कंपनी के अधिकारियों को हटा दिया। इस विजय ने हज़ारों सिपाहियों को विद्रोह करने की स्फूर्ति दी। नाना साहेब के नेतृत्व में सिपाहियों ने विद्रोह किया और क़िले को अपने अधीन कर लिया। बहुत से अंग्रेज़ों को मौत के घाट उतारा। जो बचे, उन्हें भी खूब मारा-पीटा। (-बाद)

प्रशांत सूर्योदय की बेला में झान्सी रानी के भवन के समीप के विशाल मैदान में एक युवक घुड़सवारी सीख रहा था। उस युवक से भी उम्र में बड़ा एक और व्यक्ति घोड़े की लगाम को पकड़कर दौड़ रहा था और उसकी सहायता कर रहा था। थोड़ी ही दूरी पर खड़े संस्थान के कुछ अधिकारी उन्हें प्रोत्साहन देते हुए हर्षध्वनियाँ कर रहे थे। रास्ते से गुजरती हुई सामान्य प्रजा आनंद और आश्चर्य भरे नेत्रों से यह दृश्य देख रही थी। यह जानने वे उत्सुक हो उठे और नज़दीक जाकर देखा तो यह जानकर उन्हें अपार हर्ष हुआ कि वह कोई और नहीं, स्वयं रानी लक्ष्मी बाई हैं। रानी को घुड़सवारी सिखानेवाला पूरी से आया हुआ ब्राह्मण युवक चंदन हुज़ूर है। बचपन से ही उसे लक्ष्मीबाई अपना सगा भाई मानती आयी है। वह विवाह के दूसरे ही दिन लक्ष्मीबाई की सहायता करने के लिए झान्सी चला आया था।

लक्ष्मीबाई ने उसे लौट जाने को कहा, परंतु उसने नहीं माना। उसने कहा "जब बहन विपत्ति में हो, तब भाई कैसे आराम की ज़िन्दगी बिता सकता है। बहन की रक्षा ही मेरे लिए सर्वोपरि है। जहाँ लक्ष्मीबाई है, वहीं चंदन हुज़ूर भी रहेगा।"

लक्ष्मीबाई केवल घुड़सवारी ही नहीं जानती थीं बल्कि घोड़े पर बैठकर तलवार चलाने का प्रशिक्षण भी पा चुकीं थीं। एक हाथ में उन्होंने लगाम संभाली और दूसरे हाथ से बिजली की तरह वेग से तलवार चलाने लगीं। इस दृश्य को देखकर वहाँ जमी भीड़ की खुशी का ठिकाना न रहा। शत्रुओं के छक्के छुड़ाने के लिए स्वयं सन्नद्ध होती हुई लक्ष्मीबाई को देखकर प्रजा हर्षविभोर हो चिल्ला उठी "महारानी ज़िन्दाबाद। हमारी माता ज़िन्दाबाद।" उस समय प्रजा का आवेश देखने लायक़ था।

"झान्सी ज़िन्दाबाद। मैं रहूँ या न रहूँ, देश की जनता का गौरव शाश्वत रूप से बना रहे" कहती हूई लक्ष्मीबाई लोगों के निकट आयी।

"माते, हमें भली-भाँति मालूम है कि हमारे शत्रु कितने शक्तिवान हैं और यह भी जानते हैं कि वे कितने अत्याचारी और क्रूर हैं। आपकी रक्षा करने, अपने देश की आन को बनाये रखने हम अपने रक्त के आख़िरी क़तरे तक बहाने के लिए सन्नद्ध हैं।" प्रजा ने एक होकर कहा।

"अपनी प्रजा का धैर्य-साहस मुझसे छिपा नहीं है। आपके प्यार के लिए मेरे हार्दिक धन्यवाद। भगवान आपकी रक्षा करे।"

कहती हुई लक्ष्मीबाई ने अपना हाथ ऊपर उठाया। फिर घोड़े को पीछे की तरफ़ मोड़कर राजभवन के अंदर चली गयीं।

१८५७, जून मास के अंत में यह घटना घटी। उस दिन राजभवन में मंत्री, दलनायक, पुरप्रमुख राजभवन में समाविष्ट हुए। लक्ष्मीबाई ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा "कानपुर में युद्ध चालू है। बाल्यकाल में ही मुझे युद्ध-विद्याएँ सिखानेवाले भाई समान नानासाहेब गोरों के विरुद्ध लड़ रहे हैं। कंपनी के सैनिक क़िले से बाहर आकर उनका सामना कर रहे हैं। किसी भी क्षण ब्रिटिश के हार जाने की संभावना है। अपने प्राणों की रक्षा के लिए उन्हें कहीं न कहीं भागना ही होगा। अपने को स्वतंत्र घोषित करने का यही सुअवसर है। इस विषय में आपकी राय जानने के लिए

यहाँ आप सभी को बुलाया।''

''महारानी, आपके अभिप्राय सही हैं। अपनी स्वतंत्रता घोषित करने का यही सही समय है। यहाँ ब्रिटिश के जो सैनिक हैं, अपनी हदों से आगे बढ़ रहे हैं। शराब पी रहे है । उनका अहंकार वर्णनातीत है। उनके अहंकार को तोड़ने का, उन्हें पाठ सिखाने का यही सही समय है'' एक पुरप्रमुख ने कहा। एक और पुरप्रमुख ने कहा ''सहनशक्ति की भी एक सीमा होती है। और सहनशील रहना हमारे लिए अब संभव नहीं है। हमें जमकर अंग्रेज़ों का मुक़ाबला करना होगा और उन्हें इस देश से तुरंत भगाना होगा।'' तीसरे एक और सज्जन ने उन दोनों का समर्थन करते हुए कहा ''ब्रिटिशवाले यहाँ व्यापार करने आये। यह केवल बहाना मात्र है। उनका उद्देश्य देश को अपना गुलाम बनाना है। यहाँ की संपत्ति को लूटकर अपने देश को संपन्न बनाना है; हमें दरिद्र बनाना है। हम किसी भी हालत में ऐसा होने नहीं देंगे।''

उनके अभिप्रायों को सुनकर लक्ष्मीबाई मुस्कुरायीं और प्रधानमंत्री लक्ष्मणराव की ओर घूमकर कहा ''ब्रिटिश का राजप्रतिनिधि है एल्लिस। आप सबको मालूम है कि दलनायक मेजर मारोक के समक्ष में मेरे पति ने पुत्र को गोद लिया। जब तक पुत्र बड़ा न हो, राज्य-भार को संभालने की शक्ति प्राप्त न करे, तब तक वह मेरी रक्षा में रहेगा। अंग्रेजों ने मेरी शर्त को मान भी लिया। किन्तु अब गवर्नर जनरल डलहौजी अपने वादे से मुकर गया। उसने ऐलान कर दिया कि गोद लेने की रस्म का कोई मतलब ही नहीं, वह निष्प्रयोजक है। महाराज कंपनी को या डलहौजी को गोद लेते तो वे शायद बहुत ही खुश हुए होते। यह विश्वासघात नहीं तो और क्या है ? हमारा परम कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करें। यों सोचकर इस समय अंग्रेजों को दंड देना भी उचित नहीं होगा। वे शांति के साथ झान्सी छोड़कर चले जाएँ, इसके लिए उन्हें हम एक मौक़ा देंगे।''

''महारानी, तीन सालों के पहले एक ब्रिटिश अधिकारी के अपने उच्च अधिकारियों को लिख गये पत्र की यह नक़ल है '' प्रजा के हृदय में रानी के प्रति अपार आदर-भाव हैं। वह अपने पुत्र के प्रतिनिधि के रूप में बड़ी ही दक्षता के साथ राज्य-भार संभाल रही हैं। यह महिला मार्के की हैं।'' जिन अंग्रेज़ों ने आपके बारे में इतना सब कुछ

कहा, वे ही आपके कट्टर शत्रु हो गये और आपके साथ ऐसा बुरा सलूक कर रहे हैं। यह उनकी दुराशा का जीता-जागता उदाहरण है। आपको हक़दार न मानना बड़ी ही विचित्र बात है'' प्रधानमंत्री ने कहा।

''उन्होंने जानबूझकर किया हो या अनजाने में, उन्हें इसका दंड भुगतना ही पड़ेगा। प्रधानमंत्री, इस विषय पर संपूर्ण रूप से प्रकाश डालते हुए एक पत्र लिखिये और कल ही एक दूत को उनके पास भेजियेगा। बाद सोचेंगे कि आगे हमें क्या करना होगा''। लक्ष्मीबाई ने कहा।

''जो आज्ञा, महारानी,'' कहता हुआ प्रधानमंत्री उठ खड़ा हुआ। यों उस दिन की सभा समाप्त हुई।

दूसरे दिन प्रधान मंत्री ने एक पत्र लिखा और एक दूत के द्वारा ब्रिटिश प्रतिनिधि के पास भिजवाया। उस पत्र का सारांश यों था ''झान्सी स्वतंत्र राज्य है। अगर कंपनी इस भ्रम में हो कि उसे अपने वश में कर लें तो उस भ्रम से छुटकारा पाने के लिए यही अच्छा मौक़ा है। यहाँ आप हमारे अतिथि अथवा मित्रों की तरह बरताव नहीं कर रहे हैं। हमारी प्रजा को सता रहे हैं। झान्सी की लक्ष्मीबाई हक़दार महारानी हैं। वे और झान्सी की प्रजा चाहती हैं कि आप झान्सी को छोड़कर तुरंत निकल जाएँ। ऐसा नहीं हुआ तो भयंकर परिस्थितियों के उत्पन्न होने की आशंका है। हम यह नहीं भूल सकते कि आपके सैनिक हमारी प्रजा पर अत्याचार ढा रहे हैं। हमारी जनता को आपने लूटा और उनसे बड़ी बर्बरता के साथ व्यवहार किया। कितने ही प्राणों की बलि ली। जिस क्षण हम आप पर युद्ध की घोषणा करेंगे, उसी क्षण आपके हाथों सतायी गयी, पीड़ित जनता बड़ी ही निर्दयता के साथ आप पर टूट पड़ेगी और प्रतीकार लेगी। इसलिए अच्छा इसी में है कि ऐसा होने के पहले ही आप झान्सी को छोड़ दें और चलें जाएँ।''

इस संदेश ने झान्सी में रहनेवाले ब्रिटिश अधिकारियों को आश्चर्य में डुबो दिया। किन्तु उन्होंने इस धमकी की कोई परवाह नहीं की क्योंकि उनका समझना था कि प्रशिक्षण प्राप्त सैनिकों के सामने साधारण जनता कैसे टिक सकेगी। अलावा इसके, कंपनी ने जब झान्सी को अपना बना लिया तभी झान्सी की सेना रद्द की गयी।

प्रधानमंत्री की चेतावनी की भी परवाह

न करनेवाले अंग्रेज़ों पर प्रजा ने, महारानी की अनुमति पाकर धावा बोल दिया और कंपनी के क़िले को घेर लिया।

झान्सी के अवकाश-प्राप्त दलनायकों के नेतृत्व में कितने ही सैनिकों ने युद्ध-विद्याएँ सीखी थीं, प्रशिक्षण पाया था। प्रजा भी उनके साथ थी। सभी मिलकर एकसाथ क़िले पर टूट पड़े, जिसे देखकर अंग्रेज सैनिक भौंचक्के रह गये।

"इन राक्षसों के नेतृत्व में हमारे घर लूटे गये, जलाये गये। इन दुष्टों को ज़िन्दा मत छोड़ो" कुछ अंग्रेज अधिकारियों का नाम लेती हुई प्रजा आगे बढ़ने लगी।

"ये ही वे दुष्ट, राक्षस, अत्याचारी हैं, जिन्होंने हमारे भाइयों को मार डाला" कहते हुए कुछ और लोगों ने अंग्रेजों पर तलवारें चलायीं।

ईस्ट इंडिया कंपनी के क़िले पर झान्सी का झंडा फहराया जाए, इसके पहले ही पचहत्तर अंग्रेज सिपाही व अधिकारी मार डाल दिये गये।

झान्सी की विजय से और संस्थानों को विद्रोह करने की स्फूर्ति मिली।

झान्सी के विद्रोह का यह समाचार जून, आठवीं तारीख़ को सागर पहुँचा। साथ ही यह भी मालूम हुआ कि ललितपुर में बाक्सूर राजा बहुत बड़ी सेना इकट्ठी कर रहे हैं। षाघड राजा भी ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध लड़ने के लिए सन्नद्ध हो गये। कुछ ही दिनों में नर्मदा नदी का संपूर्ण पूर्वी क्षेत्र युद्ध करने तैयार हो गया। बाक्सूर राजा ने ललितपुर पर काबू पा लिया। वहाँ के अंग्रेजों को कैद भी कर लिया। ललितपुर को छुड़ाने के लिए मेजर गौसक के नेतृत्व में सागर से सेना चल पड़ी। किन्तु राजा की सेना ने उन्हें रोका, जिस कारण अंग्रेज सेना आगे बढ़ नहीं सकी। राजा के सैनिक और गौसक के सैनिकों के बीच घमासान युद्ध हुआ। उसी समय क़ैद किये गये ब्रिटिश अधिकारियों व उनकी स्त्रीयों को सागर लौट जाने की अनुमति दी गयी। फिर भी बीच में षाघड राजा ने उन्हें क़ैद किया। तीन महीनों तक उन्हें वहाँ क़ैदी बनाकर रखा। उसके बाद उन्होंने उन्हें सागर जाने दिया। इतना सब कुछ होते हुए भी किसी एक जगह परभी ब्रिटिश अधिकारी निर्दयता से मारे नहीं गये, जो याद रखने लायक बात है। -सशेष

शादी की बातें

हजारों सालों के पहले की बात है। कश्मीर के एक नगर के समीप के पहाड़ पर एक राक्षस ने बहुत बड़ा महल बनाया और उसमें रहने लगा। उन दिनों में ऐसे राक्षस संसार में कहीं-कहीं ही रहा करते थे। यद्यपि राक्षसों की बुद्धि कम होती थी, परंतु वे बलाढ्य होते थे। इस कारण वे साधारण मनुष्यों को डराते थे। उनपर अपना रोब जमाते थे, उनपर अत्याचार करते थे और अपना जीवन गुजारते थे। उनका सामना करने की शक्ति या धैर्य किसी में होते नहीं थे, इसलिए वे किसी से डरते भी नहीं थे। अगर किसी ने दुर्भाग्यवश उनका विरोध किया तो वे उन्हें निस्संकोच मार डालते थे। क्रमशः ये राक्षस कम होते गये। कहना होगा कि ऐसे राक्षसों के नामोनिशान मिट गये। उनके विनाश के कारक कुछ बुद्धिजीवी भी थे।

कश्मीर के एक राक्षस ने अपने बल बूते पर आसपास के लोगों को डराया, धमकाया, उन्हें लूटा और बहुत-सी संपत्ति व सोना इकट्ठा किया। हां, इस राक्षस ने लोगों को लूटा, उन्हें मार डाला, इससे नगरवासियों को अत्यधिक दुख तो नहीं हुआ किन्तु अचानक कभी-कभार जब वह नगर में प्रवेश करता और कहता कि 'अपनी लड़की से मेरी शादी करो' तो वे बहुत चिंतित हो जाते थे। कोई और चारा न पाकर वे अपनी लड़की की शादी राक्षस से कर देते थे। किन्तु वह शादी-शुदा लड़की अधिक दिनों तक ज़िन्दा नहीं रहती थी। तब राक्षस एक और पत्नी के लिए आ धमकता था। इस कारण नगरवासियों को, ख़ासकर बिन ब्याही कन्याओं के लिए वह बड़ी समस्या बन गयी।

इस प्रकार चौबीस पत्नियों को खोने के बाद पच्चीसवीं पत्नी के लिए वह नगर की तरफ़ बढ़ा। एक ग़रीब किसान खेत में काम

पच्चीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

पर लगा हुआ था। राक्षस ने उस ग़रीब किसान से कहा ''मेरी शादी अपनी लड़की से करो''। किसान की समझ में नहीं आया कि क्या करूँ। मल्लिका नामक उसकी एक बेटी है। थोड़े ही दिन पहले वह विवाह-योग्य भी हुई। ग़रीब होने के कारण वह अपनी बेटी की शादी तुरंत कर नहीं पाया।

''मैं परसों रात को तुम्हारे यहाँ खाने आ रहा हूँ। तब शादी की बात तय कर लेंगे'' राक्षस ने कहा और घर लौट गया।

घर आने के बाद किसान ने यह बात अपनी बेटी से बतायी। किन्तु मल्लिका थोड़ी भी नहीं घबरायी। मल्लिका ने अपने पिता से कह ''मैं जैसा कहूँगी, वैसा करना। वैसा करोगे तो शायद राक्षस के पंजे से तुम छूट जाओगे। हो सकता है, इस रिश्ते को भुलाकर वह चुपचाप चला जाए। अगर वह यह रिश्ता नहीं भी छोड़ें, फिर भी मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि यह दारिद्र्य हमेशा के लिए तुम्हें छोड़कर चला जायेगा।''

मल्लिका की सलाह के अनुसार किसान ने अपने पास जितना भी धन था, खर्च किया और बहुत-से खरगोश ख़रीदे। पीपे भर का अंगूर रस भी इकट्ठा किया। मल्लिका अड़ोस-पड़ोस के घरों में गयी और बहुत बड़ी संख्या में हाथ से बने कपड़े ले आयी। उन कपड़ों को उसने दीवार के बाहर के खानों में क़रीने से रखा। जिस दिन राक्षस भोजन पर आनेवाला था, उस दिन खरगोशों का मांस जायकेदार पकाया। राक्षस जिस जगह पर भोजन करने बैठनेवाला था, वहाँ एक तरफ़ माँस से भरा बरतन और दूसरी तरफ़ पीपे भर के मदिरा का प्रबंध किया।

राक्षस दूसरे दिन रात को आया, भोजन करने बैठ गया। माँस उसे बढ़िया लगा।

''मेरे लिए आपने बहुत-सा खर्च किया होगा। मैं खूब खानेवालों में से हूँ, भोजन-प्रिय भी हूँ।'' राक्षस ने कहा।

''यह भी कोई बात हुई। जब तक चूहे घर में हैं, तब तक ख़र्च तो होगा ही। अगर चूहों की कमी पड़ गयी तो आटा ज्यादा लगता है'' मल्लिका ने कहा।

''चूहों से इतना बढ़िया खाना बनाया! मैंने अब तक जिन कलमुँहियों से शादी की, उनमें से किसी ने भी चूहों का मांस नहीं खिलाया। मेरी बात का एतबार करो'' राक्षस ने कहा।

अपनी होनेवाली पत्नी की किफ़ायतमंदी

की तारीफ़ मन ही मन करते हुए उसने पूछा ''तुम्हें बुनाई का काम भी अच्छी तरह से आता होगा''।

मल्लिका ने अपने हाथ में रखे कपड़े को फैलाते हुए कहा, ''पिछले महीने मैंने ही इस कपड़े को काता है।'' उसके हाथ के दोनों ओर रखे गये कपड़ों को देखकर उसने सोचा, ये सब कपड़े मल्लिका ने ही बुने होंगे। राक्षस के मन में उसके प्रति जो सद्भावना थी, वह दुगुनी हो गयी। खाना खा चुकने के बाद उसने पीपे भर की मदिरा पी ली। फिर कहा ''बढ़िया है। इसके लिए भी पैसा खूब खर्च किया होगा''।

''बिल्कुल नहीं। सड़े फलों को निचोड़ा और शराब बनायी। ये फल भला किसी और काम के लायक़ भी तो नहीं। यह सारा काम मेरी बेटी मल्लिका ही संभालती है'' किसान ने कहा।

''मैं जानता भी नहीं था कि सड़े फलों से इतनी ज़ायकेदार शराब बनायी जा सकती है। हम इन्हें सुवरों को खिलाते हैं। मल्लिका जब परिवार बसाने मेरे घर आयेगी, तब इस पद्धति को अमल में लाऊँगा। अब यह कहो कि दहेज में क्या देनेवाले हो ?'' राक्षस ने पूछा।

''मल्लिका ही ख़ास दहेज है। इससे बढ़कर दहेज क्या और हो सकता है ? वह तुम्हारी पत्नी बनकर चली जायेगी तो मुझे भारी नुक़सान पहुँचेगा। इसलिए जो उससे शादी करना चाहेगा, उसे ही मुझे ज़्यादा दहेज देना पड़ेगा। जानते हो न, इस गाँव के बड़े आदमी की पत्नी मर गयी। वह फिर से

शादी करने की सोच में है। वह सब लोगों से कहता फिरता है कि मल्लिका से मेरी शादी के लिए उसका पिता मान जाय तो उसे भारी रक़म दूँगा।'' किसान ने कहा।

राक्षस नाराज़ हो उठा और कहने लगा, ''मुझी से बात कहने की तुम्हारी यह जुर्रत। अगर मैं तुम्हारी बेटी को जबरदस्ती उठा ले जाऊँ, तो मुझे रोक सकते हो ?''

''इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हें मल्लिका के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। वह बड़ी ही जिद्दी लड़की है। अगर वह अड़ गयी तो उसे टुकड़ों में काट दो तब भी टस से मस न होगी, कोई भी काम करेगी ही नहीं। अच्छाई से पेश आओ, तभी वह कोई काम करने पर तैयार होगी''। किसान ने कहा।

''ठीक है'' कहते हुए राक्षस ने बताया

कि दहेज में वह कितनी रक़म देना चाहता है। "इतनी काफ़ी नहीं होगी। दो गुना और ज़्यादा दोगे, तभी यह शादी होगी।" किसान ने कह दिया।

राक्षस ने निश्चित रक़म देने की घोषणा की तो किसान ने उस रक़म को लेने से मान लिया। यह रक़म अपनी जीविका चलाने के लिए पर्याप्त होगी।

दूसरे दिन राक्षस थैली भर में धन ले आया और किसान को दे दिया। मल्लिका ने राक्षस से कहा, "शादी करने के पहले मेरी दो इच्छाएँ तुम्हें पूरी करनी होंगी। क़िफ़ायत से परिवार चलाऊँ, इसके लिए मेरे लिए एक घर बनवाकर तुम्हें देना होगा। मैं जैसा कहूँगी, घर भी वैसे ही बनाना होगा। दूसरी इच्छा मेरी यों है। बूढ़े बतखों के पंख जब उखाड़ोगे तब ताजे पंखों से मेरे लिए एक मुलायम बिस्तर बनाना होगा। मैं सुखपूर्वक नहीं सो पाऊँगी तो मुझसे मेहनत भी नहीं की जायेगी।"

राक्षस ने मन ही मन सोचा, "इसकी इच्छाओं की पूर्ति कोई मुश्किल काम नहीं है। अच्छा हुआ, इसने गहने या सोना नहीं माँगा। उसने खुद ही वैसा घर बनाया, जैसा घर मल्लिका चाहती थी। यह काम अगर मज़दूरों के सुपुर्द करता तो उसमें भारी रक़म लगती, इसलिए खुद ही उसने यह काम किया।

शीतकाल आ गया। मल्लिका के बिस्तर के लिए कपड़े को थैली के रूप में तैयार किया और बरफ़ गिरने का इंतज़ार होने लगा। बरफ़ जैसे ही गिरने लगता है, उस प्रदेश के लोग कहते रहते हैं "बूढ़े बतख़ों पंख गिर रहे हैं।"

जल्दी ही बरफ़ भी गिरने लग गयी। मल्लिका ने राक्षस को ख़बर भेजी "बतखों के पंख गिर रहे हैं। इकट्ठा करने आ जाओ।" वह आया और गिरती हुई बरफ़ को देखकर उसने पूछा, "कैसे इकट्ठा करूँ ?"

"अरे बुद्धू, फावड़ा ले आओ और पंखों को उठाकर मेरी थैली में डाल दो।"

राक्षस बरफ को फावड़े से उठाकर बिस्तर की थैली में डालता गया। बरफ़ का आधा भाग वहीं का वहीं पिघलता गया। शाम होते-होते थैली भर गयी। मल्लिका ने थैली बाँध दी और घर ले गयी। उस बरफ़ को उसने बिस्तर पर बिछा दिया और कहा "आज रात को इसी बिस्तर पर सो जाना और देखना कि कितना सुख मिलता है। कल

हम दोनों शादी करेंगे।''

थका राक्षस उस बरफ़ के बिस्तर पर सो गया। उसने बहुत कोशिश की, किन्तु उसके बदन को गर्मी छू नहीं पायी। उसे लगा कि बिस्तर पर बिछाये गये दुपट्टे भी गीले हैं।

सबेरे जब वह उठा तब उसका सारा बदन दुखने लगा। हड्डियों में पीड़ा होने लगी। हिलना-डुलना भी उससे हो नहीं पा रहा था। आधा बिस्तर पिघल गया।

''यह सब मुझसे नहीं होगा। हाँ, मल्लिका समर्थ स्त्री है, परंतु ऐसे बिस्तर पर सो जाऊँ तो मेरी मौत निश्चित है।'' यों सोचकर वह घर लौट पड़ा। उसे डर लगने लगा कि कहीं मल्लिका आ जाए और कहे कि चलो, शादी कर लें, तो क्या करूँ।

मल्लिका को जब मालूम हुआ कि राक्षस लौटकर चला गया तो उसने अपने पिता को उसके घर भेजा। किसान उसके घर गया और बाहर से ख़बर भिजवायी कि दुलहिन तुम्हारा इंतजार कर रही है।

''मेरी तबीयत ठीक नहीं है। उससे कहो कि मैं शादी कर नहीं पाउँगा।'' राक्षस ने किसान को अपने नौकर के द्वारा कहलाया।

नौकर ख़बर पहुँचाकर लौटा और राक्षस से कहा ''उसकी लड़की की आशाओं पर पानी फेर दिया, इसके लिए हरज़ाना भरना होगा। वह किसान पूछता है कि आप कितनी रक़म देने के लिए तैयार हैं ?''

''दहेज तो पहले ही दे दिया। पंखों का बिस्तर भी दिया। इससे ज्यादा और क्या दूं।'' राक्षस ने पूछा।

''वह कहता है कि आपने पंखों के बिस्तर को पुआ की तरह बना दिया। वह चाहता है कि आप बतखों के कुछ और पंख चुनकर दें।'' नौकर लौटकर कहने लगा।

''हमारे पिछवाड़े में जितने बी बतख़ हैं, ले जाए। उससे कहना जो चाहे ले जाए, जो चाहे करे। कुछ और कहेगा या पूछेगा तो उसे बता देना कि मार डालूँगा और कच्चा चबा लूँगा।'' राक्षस ने अपने नौकर से कहा।

जैसे ही ये बातें किसान ने सुनीं, वह वहाँ से निकल पड़ा और जाते-जाते राक्षस के सब बतख़ों को अपने साथ ले गया।

मल्लिका राक्षस के दिये पैसों से धनवान बन गयी। अपने योग्य पति को उसने चुना और सुखपूर्वक अपना जीवन बिताने लगी।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, मार्च, १९९८ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M.NATARAJAN

M.NATARAJAN

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। * '२५ जनवरी, ९८ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। * दोनों परिचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

नवंबर, १९९७ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मुन्नी मंद-मंद मुस्काए**

दूसरा फोटो : **गुडिया भी फोटो खिंचवाये**

प्रेषक : **रवींद्र गुप्ता**

४८८/४, जैकोबपुरा, गुडगाँव - पो. हरियाणा पिन - १२२ ००१.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Pvivate Ltd., Chandamama Building, Chennai- 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, 188, N.S.K.Salai, Vadapalani, Chennai- 600 026 (India) Editor : NAGI REDDI.

Registrar of News Papers, India. RN 1087/57